मरु संदेश

पत्रिका /जे.आर.ओ./2024

सातवां अंक

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

हडको वित्त पोषित CSR योजनाएं

onstruction of Govt. Sec. School Building (Expansion), Anatpura (

Installation of SPV LED Street Lighting Systems and High Mast Lighting Systems at Bilara

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक का जयपुर दौरा

श्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, चिकित्सा और स्वास्थ्य मंत्री

श्री अखिल अरोडा, IAS, अतिरिक्त मुख्य सचिव (वित्त विभाग)

श्रीमती शुभ्रा सिंह, IAS, अति. मुख्य सचिव, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

डॉ. समित शर्मा, IAS, शासन सचिव (जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग)

श्री अजिताभ शर्मा, IAS, प्रमुख शासन सचिव (उधोग एवं वाणिज्य विभाग)

श्री भास्कर आत्माराम सावंत, IAS, प्रमुख शासन सचिव (खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग)

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक एवं निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) का जयपुर दौरा

राजस्थान के विकास में हडको का योगदान

हडको देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास एवं आवास की विभिन्न योजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार का अग्रणी तकनीकी वित्तीय उपक्रम हैं। हडको अपने कार्य क्षेत्र को विस्तृत करते हुए राज्य के विकास में वित्तीय सहायता के साथ-साथ विभिन्न विकास की परियोजनाओं पर तकनीकी सहायता भी प्रदान करने जा रहा है। हडको द्वारा देश के विकास में वित्त पोषण के माध्यम से वित्तीय वर्ष 2023 - 24 में विगत वर्षों के सापेक्ष महत्ती प्रगति की है।

राजस्थान राज्य में भी हडको द्वारा वित्तीय वर्ष 2023 - 24 में विगत वर्षों के सापेक्ष कई योजनाओं पर वित्तीय सहायता प्रदान की है, जिनमें प्रमुख योजनाएँ - जल जीवन मिशन, इंटरसिटी सड़क निर्माण योजनाएँ, पावर सेक्टर की योजनाएँ, अक्षय ऊर्जा सोलर पार्क, स्मार्ट सिटी और अमृत योजना के साथ - साथ नगर निकायों में विभिन्न बुनियादी ढांचे के विकास कार्यों का निर्माण, भरतपुर ड्रेनेज योजना, इत्यादि पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

हडको द्वारा केंद्र सरकार की विभिन्न आवासीय एवं इंफ्रास्ट्रक्चर विकास की योजनाओं एवं राज्य सरकार द्वारा घोषित परियोजनाओं पर राज्य सरकार के फण्ड (Viability Gap Funding) पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त राज्य के विकास में तकनीकी सहयोग प्रदान करने की दिशा में भी हडको राज्य के विभिन्न शहरों के मास्टर प्लान, PMC, DPR preparation, TIPMA इत्यादि कर राज्य के विकास में सहयोग करेगें। साथ ही Capacity Building के माध्यम से राज्य के कर्मचारी / अधिकारियो को ट्रेनिंग सुविधा भी प्रदान की जा रही है। हडको द्वारा कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (CSR) के तहत राज्य में विभिन्न संस्थाओं को अनुदान प्रदान किया गया है - अभी तक 27 योजनाओं स्वीकृत की गई है।

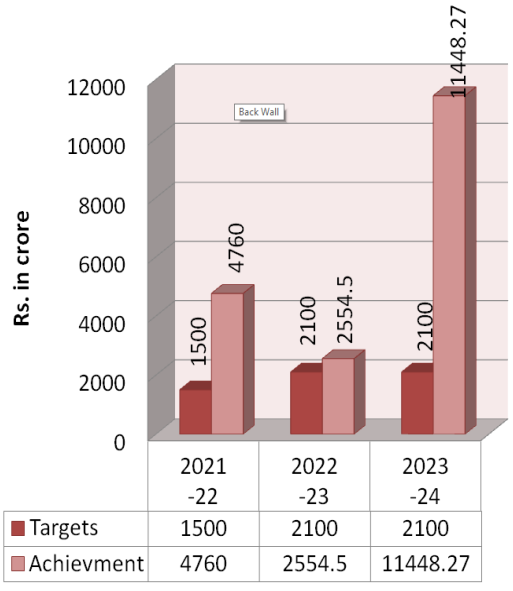

SANCTION

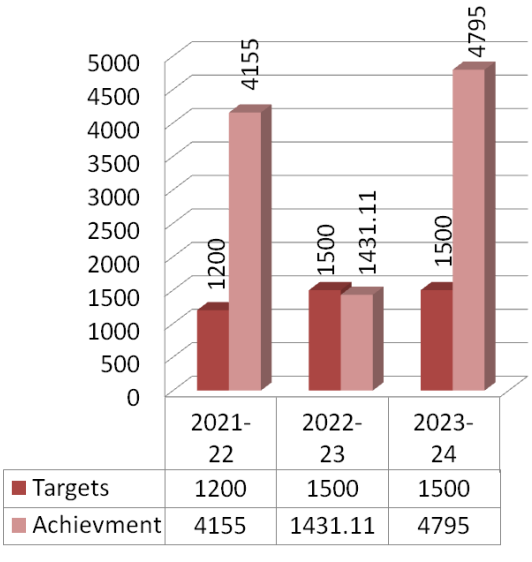

RELEASES

~~*~~*~~

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **''मरू संदेश'' का 7वां अंक** ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन को बढावा देने के लिए गृह पत्रिकाएं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2023–24 में राजस्थान राज्य में हडको ने विगत वर्षो के सापेक्ष कई योजनाओं (इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास एवं आवास) पर वित्तीय सहायता प्रदान की है, जिनमें प्रमुख योजनाएँ – जल जीवन मिशन, इंटरसिटी सड़क निर्माण योजनाएँ, पावर सेक्टर की योजनाएँ, अक्षय उर्जा सोलर पार्क, स्मार्ट सिटी और अमृत योजना के साथ – साथ नगर निकायों में इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास कार्यों का निर्माण, भरतपुर ड्रेनेज योजना, इत्यादि पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय, परामर्श सेवाओं के क्षेत्र में भी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। हडको राजस्थान राज्य के विकास में सैदव अग्रणी संस्थान रहा है।

उपरोक्त उपलब्धियों के साथ – साथ हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रति अपेन दायित्वों का निर्वाहन करने का प्रयास कर रहा है। गृह पत्रिका **मरू संदेश** में हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों, ज्ञानवर्धक लेख, तकनीकी जानकारी आदि को हिंदी भाषा के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया गया है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय एवं सभी कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संजय कुलश्रेष्ठ

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका **''मरू संदेश''** के 7वें अंक का प्रकाशन करते हुए राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह कर रहा है। इस अंक में जहाँ एक ओर हडको की कार्य प्रणाली और तकनीकी जानकारी का समावेश है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न विधाओं पर विचारात्मक लेख, प्रेरणास्पद कहानियाँ, कविताएँ तथा क्षेत्रीय कार्यालय की विविध गतिविधियाँ भी परिलक्षित की गई है।

हडको द्वारा राजस्थान राज्य के आवास एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास की विभिन्न् परियोजनाओं पर वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है। इसके अतिरिक्त हडको जयपुर द्वारा परामर्श सेवाओं के क्षेत्र में भी अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है। इस वित्तीय वर्ष में अबतक जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उच्चतम ऋण स्वीकृत एवं अवमुक्ति का लक्ष्य प्राप्त किया गया है।

उपरोक्त के साथ – साथ राजभाषा के क्षेत्र में भी जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय उत्कृष्ट कार्यो का प्रदर्शन कर रहा है। हडको की विभिन्न गतिविधियों को इस पत्रिका के माध्यम से एक साथ पिरोने का प्रयास किया गया है। मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को **''मरू संदेश'' ई–पत्रिका** के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किए जाते रहेंगे।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

यह अत्यंत हर्ष की बात है जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस क्रम में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से ई–पत्रिका **''मरू संदेश''** का 7वां अंक प्रकाशित किया जाना गर्व का विषय है।

हडको द्वारा राजस्थान राज्य में विभिन्न् परियोजनाओं पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। जिसमें जल आपूर्ति, सडक निर्माण, आधारभूत सुविधा का निर्माण, सिवेरज, ड्रेनेज, स्मार्ट सिटी, इत्यादि हेतु ऋण स्वीकृति एवं अवमुक्ति की जा रही है। हडको राजस्थान राज्य के विकास में महत्ती भूमिका अदा कर रहा हैं। गत 3 वर्ष की तुलना में हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में ऋण स्वीकृति में तीन गुना की वृद्धि हुई है।

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा संबंधी दिशा – निर्देशों का पालन किया जा रहा है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। इसी क्रम में **ई–पत्रिका मरू संदेश** के **7वें अंक** का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मैं जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी सदस्यों को इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हॅ।

शुभकामनाओं सहित।

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

राजभाषा कार्यान्वयन को बढावा देने के लिए कार्यालय में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह प्रसन्नता का विषय है कि हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह ई–पत्रिका **''मरू संदेश''** के **7वें अंक** का प्रकाशन कर रहा है।

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा गृह ई–पत्रिका का प्रकाशन डिजिटलीकरण को बढावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। सरकारी कामकाज में राजभाषा प्रयोग के उत्तरोत्तर विकास में हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन उपयोगी सिद्ध होता है।

अतः मैं क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों को राजभाषा के प्रति स्नेह के लिए बधाई देता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि **मरू संदेश** का अनवरत प्रकाशन जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

विनीत गुप्ता

विनीत गुप्ता
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका ''**मरू संदेश**'' **का 7वां अंक ई–पत्रिका** के रूप में आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

भाषा संस्कृति का कोष और वाहन है। भाषा केवल विचारों के आदान प्रदान का माध्यम ही नहीं अपितु विचारों की जननी के रूप में उनके भावों को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश का विकास तभी सम्भव है जब उसके पास अपनी सशक्त भाषा हो। भाषा किसी भी देश की भावनाओं एवं अस्मिता से जुडी होती है। राजभाषा हिंदी को अपने दैनिक कार्यक्रम में शामिल करने से न केवल हम अपने कार्यालयिक दायित्व को पूरा करते है बल्कि अपनी अस्मिता को भी सुरक्षित करते है।

अपने अस्तित्व को सुरक्षित करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि दायित्व भी है, इसलिए हमें अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करना चाहिए। यह सरल एवं सुगम भी है। राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने की दिशा में मरू संदेश का निरंतर प्रकाशन एक छोटा सा प्रयास मात्र है। आशा है की यह प्रयास सफल रहेगा। आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रिया एवं सुझाव अवश्य भेजें, जिससे इस पत्रिका को बहुपयोगी बनाया जा सके।

सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

उपलब्धियाँ

डॉ. श्रिया गर्ग, पुत्री श्रीमती अंजु गर्ग, वरि. प्रबंधक (सचि.) ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित आई. एन.आई. सी. ई. टी. एन्ट्रेंस परीक्षा मे 200 रैंक प्राप्त कर एम्स जोधपुर में M.D.(Pediatrics) मे प्रवेश प्राप्त किया|

सुश्री नताशा ठागरिया, पुत्री श्री नरेश कुमार ठागरिया, **DGM(IT)** द्वारा MBBS Course, Govt. Medical College, Bharatpur से सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया।

पुलह भटनागर पुत्र श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख **Ecole Polytchnique's, Paris** से मास्टर ऑफ साइंस पूर्ण कर लिया गया है, साथ ही इनका **EPFL (Swiss Federal Institute of Technology, Lausanne, Switzerland)** में **PHD** हेतु चयन / प्रवेश प्राप्त हुआ है।

सुश्री लिपी भटनागर, पुत्री श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा MBBS के Final Year में कुल 65 प्रतिशत अंक प्राप्त कर Internship हेतु प्रवेश कर लिया गया।

श्री नरेश कुमार ठागरिया,
उप महाप्रबन्धक (IT)

श्री नरेश कुमार ठागरिया, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.) इस वित्तीय वर्ष में मार्च 2025 और श्री अरूण शर्मा, वरि. प्रबन्धक – सचि. महा दिसम्बर 2024 में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय से सेवानिवृत हो रहे है।

श्री अरूण शर्मा,
वरि. प्रबन्धक – सचि.
(राजभाषा)

"रिसाइक्लिंग"

रीसाइक्लिंग कचरे को नई सामग्री या उत्पाद में बदलने की प्रक्रिया है। यह पर्यावरण की सुरक्षा और सार्वभौमिक कार्बन उत्सर्जन को कम करने का एक शानदार तरीका है। रीसाइक्लिंग का मतलब बेकार सामग्री को कुछ उपयोगी सामग्री में परिवर्तित करना है जैसे – ग्लास, पेपर, प्लास्टिक और एल्यूमीनियम तथा स्टील जैसी धातुएं आमतौर पर पुनर्नवीनीकरण की जाती हैं। अगर हम अपनी भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस दुनिया की रक्षा करना चाहते हैं तो रीसाइक्लिंग आवश्यक है। हम पुराने इस्तेमाल किए हुए उत्पादों से नए उत्पाद बनाते हैं। अपने पुराने उत्पादों को पुन: उपयोग और ना फेंकने से आप वास्तव में रीसाइक्लिंग कर रहे हैं। रीसाइक्लिंग अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता के बिना समाज को बहुत अधिक उपयोगी उत्पाद प्रदान करने के अलावा पर्यावरण का बचाव करने में मदद करता है। इसके महत्व को कई मायनों में देखा जा सकता है। जनता को इसके महत्व के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है ताकि वे पूरे दिल से इसके प्रति अपना योगदान दें।

रिसाइक्लिंग क्यों महत्वपूर्ण है?

- रीसाइक्लिंग पृथ्वी को बचाता है – एक उत्पाद का पुनर्नवीनीकरण पर्यावरण को सुरक्षित रखने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए कागज को रीसाइक्लिंग करने के कारण अधिक पेड़ों को काटे बिना पेपर उत्पादन का परिणाम हो सकता है।

- पुनर्चक्रण ऊर्जा बचाता है – सामग्री से एक नया उत्पाद बनाने की अपेक्षा उसी उत्पाद को रीसाइक्लिंग करने से कम ऊर्जा खर्च होती है। उदाहरण के लिए नए एल्यूमीनियम उत्पाद को बनाने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा खर्च होती है। इस प्रकार एक पुराने एल्यूमीनियम को फिर से रीसाइक्लिंग करके हम धातु का पुन: उपयोग कर सकते हैं और बड़ी ऊर्जा खर्च होने से बच सकते हैं जो पर्यावरण की सुरक्षा में मदद करती है।

- रीसाइक्लिंग ग्लोबल वार्मिंग को कम करने और प्रदूषण को कम करने में मदद करता है – रीसाइक्लिंग के मुख्य लाभों में से एक ऊर्जा बचत है। कार्बन या ग्रीनहाउस गैसों, जो वातावरण के लिए बहुत हानिकारक है यदि वे उत्सर्जित हो जाती हैं, के कम उत्सर्जन में ऊर्जा की बचत के परिणाम देखने को मिलते हैं जो कि ऊर्जा उत्पादन द्वारा गठित उप-उत्पाद है।

- लैंडफिल में रीसाइक्लिंग अपशिष्ट उत्पाद को कम कर देता है – अपशिष्ट जिसे पुनर्नवीनीकरण नहीं किया जा सकता वह आम तौर पर लैंडफिल में डाला जाता है। यहाँ कचरे को क्षय, सड़ांध या विघटित होने के लिए छोड़ दिया जाता है और यह पूरी तरह से

विघटित करने के लिए कई साल ले सकता है। अधिक से अधिक कचरे को लैंडफिल में भेजा जा रहा है और यदि भविष्य में लैंडफिल भेजने की बजाए रीसाइक्लिंग नहीं की गई तो लैंडफिल की जगह हमारे घरों के ठीक पीछे हो सकती है।

- रीसाइक्लिंग पैसे बचाने में मदद करता है – पुनर्नवीनीकरण वस्तुओं पर आमतौर पर कम लागत लगती है। पुरानी सामग्री और बहुत कम ऊर्जा का उपयोग करके पुनर्नवीनीकरण उत्पाद को बहुत कम राशि पर बेचा जा सकता है। इसके अलावा रीसाइक्लिंग के लिए बेकार कचरे को बेचना फ़ायदे का सौदा है।

कारण – क्यों लोग रीसायकल नहीं करते?

1. रीसाइक्लिंग असुविधाजनक है

रीसाइक्लिंग न करने के लिए किए गए सर्वेक्षण के अनुसार प्राथमिक कारण यह था कि लोगों को यह प्रथा सुविधाजनक या उनके हिसाब से सरल नहीं लगी। उन्हें लगा कि उनको स्क्रैप डीलर या रीसाइक्लिंग सेंटर में अपने घरेलू अपशिष्ट को छोड़ने के लिए अतिरिक्त कदम उठाना होगा। कई अपार्टमेंट या सोसाइटी में पर्याप्त रीसाइक्लिंग डिब्बे नहीं हैं।

2. लोगों को रीसाइक्लिंग समझ नहीं आता

रीसाइक्लिंग न करने का एक अन्य कारण यह है कि लोग रीसाइकिल करने योग्य और रीसाइकिल ना करने योग्य उत्पादों के बीच अंतर करने में सक्षम नहीं हैं। उनके अनुसार रीसाइक्लिंग समझने योग्य प्रक्रिया नहीं है।

3. कम जगह का होना

लोगों के पास आम तौर पर छोटे घर हैं और जगह की कमी कई लोगों के लिए एक मुद्दा है। वे अपने घर के आसपास कचरा देखना नहीं चाहते जहां जगह एक समस्या है।

4. मैं केवल तभी रिसाइकिल करूँगा जब मुझे पैसा मिलेगा

यह भी एक ख़राब बहाना है जो लोग बनाते हैं जब उनसे रीसाइक्लिंग के बारे में पूछा जाता है। उनके अनुसार स्क्रैप का निपटान से उन्हें अच्छी मात्रा में पैसा नहीं मिलता या उन्हें इसमें किसी प्रकार का कोई प्रोत्साहन शामिल नहीं दिखता। बहुत से लोगों को तब तक रीसाइकिल जरूरी नहीं लगता जब तक इसमें कोई मौद्रिक लाभ न हो।

5. हरियाली देखने की इच्छा नहीं है

आज ऐसे भी लोग हैं जो ग्लोबल वार्मिंग और प्रदूषण के बारे में परवाह नहीं करते हैं। उनकी प्राथमिकता सूची में इन चीजों की कोई अहमियत नहीं है। इसलिए उनमें ग्रीन-फ्रेंडली पर्यावरण के लिए रीसाइक्लिंग की पहल में योगदान करने की कोई इच्छा नहीं दिखती।

रीसाइक्लिंग की प्रक्रिया

ग्लास – ग्लास बिखर जाता है और 'क्यूलेट' नामक छोटे टुकड़ों में टूट जाता है जिसकी चौड़ाई 5 सेमी से अधिक नहीं है। कांच के टुकड़े रंगीन, स्पष्ट, भूरे और हरे रंग में छाटें जाते हैं। अलग-अलग रंग महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्थायी है। ग्लास सिलिका से बना है जो पिघल जाता है और नए आकारों और उत्पादों में ढल जाता है।

पेपर – पेपर में 2 घटक है – लकड़ी और पानी। तो सबसे पहले रीसाइक्लिंग के माध्यम से कागज को दो

भागों में विभाजित किया जाता है ताकि इसे सुधारा जा सके। स्याही और गंदगी जैसे प्रदूषण को फ़िल्टर्ड किया जाता है। पेपर संकलित किया जाता है और उसे गर्म पानी में डाला जाता है। यह स्नान जल्दी से कागज को सेलूलोज़ फाइबर के छोटे से तारों में तोड़ देती है जिससे 'पल्प' नामक एक मसालेदार पदार्थ कहा जाता है – मूल रूप से गीला ढक्कनदार पेपर। हालांकि कागज अभी भी गंदा है। इसके बाद इसे एक स्क्रीन पर डाला जाता है जहां शेष गंदगी गोंद या प्लास्टिक के कणों की तरह निकाली जाती है। फिर इसे डी-इनकर भेजा जाता है जहां इसे धोया जाता है जिसमें हवा के बुलबुले और साबुन जैसे रासायनिक पदार्थ मुख्यतः 'सर्फैक्टेंट' शामिल होते हैं जो कागज को स्याही से अलग करते हैं। हवा के बुलबुले स्याही को सतह और पल्प तक ले जाते हैं जो नीचे तक जाती है। वह पल्प अब साफ है और उससे नए पेपर उत्पाद बनाए जा सकते हैं।

स्टील – स्टील का इसके किसी भी गुण को खोए बिना दोबारा पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है। तरल फ़्लोटिंग सिस्टम की मदद से उच्च वायु-दबाव प्रणाली स्टील को अन्य धातु से अलग करती है और इसके बाद हाइड्रोलिक मशीनरी द्वारा भारी दबाव डालने के बाद इसे कम किया जाता है। कभी-कभी गैस और प्लाज्मा मेक भी इस्तेमाल होता है तब स्टील को पिघला दिया जाता है और नए आइटम जैसे कि डिब्बे, बर्तन, कार के हिस्सों, पेपर क्लिप इत्यादि में परिवर्तित किया जाता है।

एल्यूमिनियम – स्टील के समान एक बार अलग हो जाने पर एल्यूमीनियम पुनः उपयोग करने योग्य बनाने के लिए इसके साथ ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ता। यह काटा जाता है, धोया जाता है और चिप्स में बदल जाता है जो एक बड़ी भट्ठी में पिघल जाता है और फिर मोल्ड में डाला जाता है। फिर उन्हें निर्माताओं के लिए भेज दिया जाता है जहां वे फिर से पिघलाए जाते हैं और पतली चादरों में बदल दिए जाते हैं जिन्हें नए उत्पादों में काटा, बदला और आकार दिया जाता है।

प्लास्टिक – प्लास्टिक 6 विभिन्न प्रकार के रसायनों से बना है – पॉलीथीन टेरेफाथलेट, उच्च घनत्व पॉलीथीन, पॉलीविनाइल क्लोराइड, कम घनत्व पॉलीथीन, पॉलीप्रोपाइलीन और पॉलीस्टायरीन। प्लास्टिक को बड़ी कार्बन श्रृंखला से बनाया जाता है। इसलिए प्लास्टिक के कुछ रूपों को पिघला या जा सकता है और कुछ में सुधार किया जा सकता है जबकि अन्य को नए प्लास्टिक के साथ मिश्रित किया जा सकता है और अन्य को केवल अलग-अलग उपयोगों के लिए अन्य आकारों में ढाला जा सकता है।

घरेलू रीसाइक्लिंग

अगर आपके पास रिसाइकिलिंग का ज्ञान है तो आपको पता होगा कि घर में और आसपास रिसाइकिलिंग काफी सरल है। आप जो खाद्य उत्पाद बाजार से खरीदते हैं उसके बारे में सख्ती से सोचकर और उन्हें रीसाईकल करने का तरीका आर्थिक रीसाइक्लिंग की दिशा में शुरुआत है।

- **विभिन्न घरेलू सामग्रियों को रिसाइकल करना** – कई सामग्रियां जैसे कागज, प्लास्टिक, धातु और काँच को रिसाइकल किया जाता है। फर्नीचर, उपकरण, आर्टिफैक्ट और वाहनों की तरह वैकल्पिक चीजें भी रिसाइकल की जा सकती हैं हालांकि

हम में से बहुत से ऐसा करने की कोशिश नहीं करते हैं।

- **एक ऐसा उत्पाद खरीदें जिसे रिसाइकल किया जा सके** – किरयाने की दुकानों पर सामान खरीदते समय ऐसे उत्पादों को ख़रीदे जिनको रीसाईकल किया जा सके जैसे कांच के जार और टिन के डिब्बे आदि।

- **रिसाइकिलिंग प्रक्रिया से बने सामान को खरीदें** – आप पैकेजिंग पर लेबल को देख कर यह बता सकते हैं कि कोई उत्पाद पर्यावरण के अनुकूल है या नहीं।

- **असुरक्षित सामग्री की खरीदारी से बचें** – असुरक्षित कचरा वाले उत्पाद को रीसाईकल करने में परेशानी होती है। कोशिश करें और घर साफ़ करने के लिए सुरक्षित विकल्प की पहचान करें और संभव हो तो गैर विषैले उत्पादों का उपयोग करें।

- **रिसाइकल डिब्बे** – सुनिश्चित करें कि आपके पास अपने घर में रिसाइकल करने के लिए डिब्बे हो। इसे एक साफ़ सुथरी जगह में रखें ताकि आप इसका उपयोग करना ना भूले। आपकी देशी काउंसिल आपको रिसाइकल डिब्बे देने में सक्षम होनी चाहिए जो कांच, कागज, एल्यूमीनियम और प्लास्टिक जैसी सामग्री के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

बगीचे में रिसाइकल

बगीचे के उत्पादों और पौधों का रीसाइक्लिंग करके आप अपने बगीचे में पर्यावरण को बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं।

- **कम्पोस्टिंग** – कम्पोस्टिंग एक ऐसा तरीका है जहां कचरा खाद में परिवर्तित हो जाता है जो पौधों के विकास की सहायता के लिए आपके बगीचे में उपयोग किया जा सकता है। उद्यान में पौधों और घर में बचे हुए खाने के रूप में कचरे को रीसाइक्लिंग करने का एक शानदार तरीका है।

- **ग्रास साइक्लिंग** – ग्रास साइक्लिंग करना बगीचे की घास को काटने के बाद उन्हें रीसाइक्लिंग करने के एक शानदार दृष्टिकोण है। उन्हें नीचे फेंकने की बजाए नीचे की कटाई करके छोड़ दें। वे पोषक तत्वों में विकसित होंगे और मिट्टी के भीतर उर्वरक के रूप में कार्य करेंगे।

- **बीज बोना** – कचरे के डिब्बे में फलों और सब्जी के बीज ना फेंके। इसके बजाए उन्हें अपने बगीचे में बोएं। बढ़ते पौधे और पेड़ ग्लोबल वार्मिंग को कम करके और कई पक्षियों और प्राणियों के लिए घर उपलब्ध कराने के द्वारा परिवेश को बढ़ाएंगे।

समाज में रिसाइकिलिंग

- **स्थानीय रिसाइकिलिंग सुविधाएं** – रीसाइक्लिंग सुविधाएं समुदाय के उपयोग के

लिए प्रदान की जाती हैं। जहां कहीं भी आपकी स्थानीय रीसाइक्लिंग सुविधाएं हैं उनका उपयोग करने का तरीका सत्यापित करें।

- **स्कूल और व्यवसाय** – ये रीसाइक्लिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अपने संकायों या कार्यस्थल पर उपलब्ध रीसाइक्लिंग योजनाओं का पालन करें और उन्हें सुधारने के तरीकों के बारे में सोचें।

- **सामुदायिक परियोजनाएं** – नकदी दान करके या नई अवधारणाओं को प्रदान करने और कार्यान्वित करने से रीसाइक्लिंग के संबंध में स्थानीय सामुदायिक परियोजनाएं भी शामिल हो गई हैं।

- **कैन्स के लिए कैश** – यह परियोजना उन लोगों को नकद पैसा देती है जो अपने एल्यूमीनियम के डिब्बे को रीसाइकल करते हैं। यूनाइटेड किंगडम में डिब्बों को रीसाइकल करने के लिए 500 से अधिक पैसा मिलता है। भारत में हमारे पास स्क्रैप डीलर हैं जहां हम नकद पैसे के लिए इन कैन्स का आदान-प्रदान कर सकते हैं। यह एक बहुत ही अच्छी पहल है इसलिए हमें इसमें शामिल होना चाहिए और इस पद्धति द्वारा अतिरिक्त पैसा कमाना चाहिए।

निष्कर्ष

इन सरल बिंदुओं के बाद हम पर्यावरण के लिए थोड़ा सा योगदान कर सकते हैं जो निश्चित रूप से लंबे समय तक फलदायी होंगे। इससे न केवल पर्यावरण का लाभ होगा बल्कि मनुष्य को भी फायदा होगा। इसलिए इससे पहले कि आप कुछ फेंके, पहले सोचें क्या इसका पुन: उपयोग किया जा सकता है।रीसाइक्लिंग घर पर भी की जा सकती है और इसे बच्चों को पोषण के समय एक अच्छी आदत के रूप में सिखाया जाना चाहिए। बायोडिग्रेडेबल अपशिष्ट को पौधों के लिए खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। पर्यावरण के लिए रीसाइक्लिंग आवश्यक है। मनुष्य को भी बेकार सामग्री को रीसाईकल करने के लिए प्रयास करना चाहिए। रीसाइक्लिंग के महत्व पर कई बार जोर दिया गया है हालांकि अभी भी बहुत से लोग इससे बचना चाहते हैं।

लगभग कुछ भी पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है और कचरे को पुन: उपयोग के लिए नया आकार दिया जा सकता है ।

डा. अरूण कुमार राणा
संयुक्त महाप्रबन्धक (परियोजना)

भारत में विनिमय दर प्रबंधन (Exchange Rate Management in India)

भारतीय रुपये का सापेक्ष मूल्य (Valuation) भारत के प्रमुख व्यापारिक साझेदार देशों की मुद्राओं की तुलना में लगभग दो साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है । केंद्रीय बैंक के हस्तक्षेप और घरेलू मुद्रास्फीति के अधिक रहने के कारण ऐसा हुआ है |

वर्ष	विदेशी मुद्रा बाजार और विनिमय दर
	निश्चित / नियत विनिमय दर (Fixed Exchange Rate) का युग
1947-1971	इस दौरान रुपये का मूल्य सोने के सन्दर्भ में तय किया गया था और भारतीय रुपया ब्रिटैन के पाउंड स्टर्लिंग से जुड़ा हुआ था |
1971	ब्रेटन - वुड्स प्रणाली ख़त्म हो गयी और कई प्रमुख मुद्राओं का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव ख़त्म हो गया | दिसंबर, 1971 तक रुपया पाउंड स्टर्लिंग से जुड़ा रहा था |
1975	भारतीय रुपया को कुछ मुद्राओ के एक बास्केट से जोड़ दिया गया था| इसके लिए किस मुद्रा का चयन किया जाएगा और किस मुद्रा का भारांश कितना होगा, यह सब तय करने का काम RBI के विवेक पर छोड़ दिया गया था| भारत ने इसे सार्वजनिक रूप से घोषित नहीं किया था |
1991	**में भुगतान संतुलन (Balance of Payments : BOP) सम्बन्धी संकट**
फ्लोटिंग एक्सचेंज रेट के युग की शुरुआत	
1991	नियत (Fixed) विनिमय दर प्रणाली का अंत
1992	उदारीकृत विनिमय दर प्रबंधन प्रणाली (Liberalized Exchange Rate Management System : LERMS) की शुरुआत हुई
1992	बाजार आधारित विनिमय दर प्रणाली लागू की गयी

करेंसी वैल्यूएशन (Currency Valuation):

यह एक मुद्रा के किसी अन्य मुद्रा के सापेक्ष कीमत या मूल्य के निर्धारण की प्रक्रिया है | यह मुल्य या कीमत कई कारकों द्वारा प्रभावित होता है | इन कारकों में बाजार दर, मुद्रास्फीति, पूंजी निवेश और मुद्रा की आपूर्ति, इत्यादि शामिल हैं| मुद्रा का मूल्य जानने का सबसे आसान तरीका विनिमय दर है |

विनिमय दर वह दर या मूल्य है जिस पर एक मुद्रा का किसी दूसरी से लेन- देन किया जाता है | उदाहरण के लिए - यदि हमें एक अमेरिकी डॉलर (USD) प्राप्त करने के लिए 80 रुपये (INR) देने पडते हैं तो विनिमय दर 80 रुपये प्रति डॉलर होगी।

विनिमय दर निर्धारण की विधियां :

- **नियत (यानी निश्चित / स्थिर / तय) विनिमय दर (Fixed Exchange Rates):** इस प्रणाली में एक मुद्रा का मूल्य किसी अन्य मुद्रा, मुद्राओं की एक बॉस्केट या सोने जैसी वस्तु के मूल्य से निर्धारित या तय किया जाता है ।

इस प्रणाली में केंद्रीय बैंक मुद्रा की नियत दर को बनाए रखने के लिए समय -समय पर हस्तक्षेप करता रहता है ।

निश्चित विनिमय दर प्रणाली में, किसी अन्य विदेशी मुद्रा की तुलना में घरेलू मुद्रा की विनिमय दर में वृद्धि को अवमूल्यन कहा जाता है। इसका मतलब यह है कि किसी दी गई विदेशी मुद्रा की 1 इकाई खरीदने के लिए अधिक घरेलू मुद्रा की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, जब विनिमय दर गिरती है तो इसे पुनर्मूल्यांकन कहा जाता है|

- **लचीली (या तिरती) विनिमय दर (Flexible Exchange Rates):** इसे फ्लोटिंग या तिरती विनिमय दरों के रूप में भी जाना जाता है । इसमें मुद्रा की विनिमय दर बाजार की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है । इसका आशय है कि विनिमय दर अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में मुद्रा की मांग और आपूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है |

  इस प्रणाली में केंद्रीय बैंक विनिमय दर के स्तर को प्रभावित करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप नहीं करता है ।

  फ्लोटिंग विनिमय दर प्रणाली के तहत, किसी अन्य विदेशी मुद्रा की तुलना में घरेलू मुद्रा की विनिमय दर में वृद्धि को मूल्यह्रास कहा जाता है। इसका मतलब यह है कि विदेशी मुद्रा की एक इकाई खरीदने के लिए अधिक रुपये की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, अभिमूल्यन अन्य विदेशी मुद्रा की तुलना में घरेलू मुद्रा की विनिमय दर में गिरावट है। जिसका अर्थ है कि विदेशी मुद्रा की एक इकाई खरीदने के लिए कम रुपये की आवश्यकता होती है।

  यदि किसी देश की आयात पर निर्भरता बहुत अधिक है, जैसे कि भारत, तो जितनी विदेशी मुद्रा आती है उससे अधिक विदेशी मुद्रा देश से बाहर चली जाती है। इससे विनिमय दर पर नीचे की ओर दबाव पड़ता है और स्थानीय मुद्रा का मूल्यह्रास हो सकता है। जब मूल्यह्रास होता है, तो आयातित सामान स्थानीय मुद्रा में अधिक महंगा हो जाएगा। किन्तु मूल्यह्रास से निर्यातकों को लाभ होगा क्योंकि जब वे अपने उत्पादों के निर्यात से प्राप्त डॉलर का आदान-प्रदान करेंगे तो उन्हें रुपये में अधिक राजस्व मिलेगा। अभिमूल्यन के मामले में उलट परिस्थिति होती है ।

- **प्रबंधित विनिमय दर (Managed Exchange Rates):** यह एक ऐसी प्रणाली है जहाँ मुद्रा का मूल्य मुख्य रूप से बाजार की शक्तियों द्वारा निर्धारित किया जाता है, लेकिन केंद्रीय बैंक कभी-कभी विनिमय दरों को स्थिरता प्रदान करने या प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप कर सकता है ।

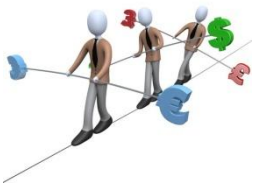

भारत में विनिमय दर का निर्धारण

1993 से विनिमय दर के निर्धारण में बाजार के उतार-चढ़ाव की शक्ति को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए एक बेहतर तंत्र स्थापित करने की कोशिश की जा रही है ।वर्तमान में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा विनिमय दर के निर्धारण में नॉमिनल इफेक्टिव एक्सचेंज रेट (NEER) और रियल इफेक्टिव एक्सचेंज रेट (REER) प्रणालियों का उपयोग किया जाता है ।

विनिमय दरों के प्रबंधन में चुनौतियां

- **अप्रत्याशित भू-राजनीतिक घटनाएं**: अप्रत्याशित वैश्विक घटनाएं, जैसे- व्यापार युद्ध (अमेरिका -चीन व्यापार युद्ध), भू-राजनीतिक तनाव (यूक्रेन-रूस युद्ध) या प्राकृतिक आपदाएं विनिमय दरों में अचानक और अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव का कारण बन सकती है।
- **सट्टेबाजी और छेडछाड**: सट्टेबाजी और छेडछाड के लिए विदेशी मुद्रा बाजार मुद्रा की खरीद और बिक्री करने से विनिमय दर में अस्थिरता आ सकती है । ये गतिविधियां स्थिर आर्थिक स्तिथि बनाए रखने में नीति निर्माताओं के लिये चुनौतियां पैदा कर सकती हैं।

- **सरकारी हस्तक्षेप**: मुद्रा के अवमूल्यन या मूल्यह्रास जैसे उपायों के द्वारा विनिमय दर को स्थिर करने या प्रभावित करने हेतु सरकारों या केंद्रीय बैंकों द्वारा हस्तक्षेप करने से मुद्रा बाजार में गलत संदेश जाता है। यह नीति निर्माताओं के लिये चुनौतियां पैदा करता है।
- **इम्पॉसिबल ट्रिनिटी या असंगत त्रयी**: यह एक प्रकार की अवधारणा है। इसके अनुसार एक अर्थव्यवस्था एक ही समय में निम्नलिखित तीनों स्तिथियों को नहीं अपना सकती है :
  - स्वतंत्र मौद्रिक नीति,
  - नियत (फिक्स्ड) विनिमय दर, और
  - अपनी सीमाओं के पार पूंजी के मुक्त प्रवाह की अनुमति देना।

हर्ष पसरीजा
उप महा प्रबंधक (वित्त)

"आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस"

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक बहुत ही रोचक और गहरा विषय है जो कंप्यूटर विज्ञान, मशीन लर्निंग, और न्यूरल नेटवर्किंग के माध्यम से मानव जैसे गुणों को कॉम्प्यूटरों और मशीनों में सिमुलेट करने का प्रयास करता है। इसका मुख्य उद्देश्य मशीनों को सोचने, सीखने, और कार्य करने की क्षमता प्रदान करना है, जिससे वे विशिष्ट कार्यों को स्वतंत्र रूप से समझ, संभाल, और समाधान कर सकें।

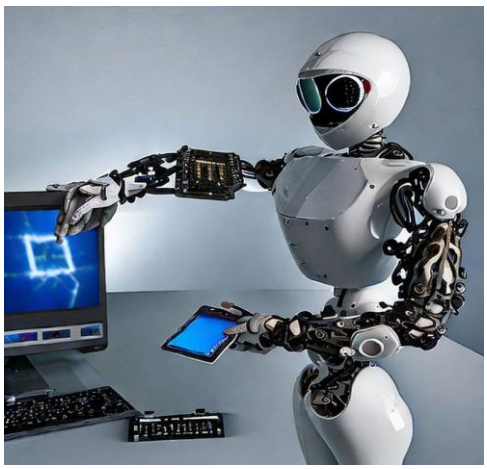

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का मतलब होता है कंप्यूटर या मशीनों को मानव जैसी सोचने और काम करने की क्षमता प्रदान करने का कार्य। इसका उद्देश्य यह होता है कि मशीनों को स्वतंत्रता और विवेक के साथ कार्य करने की क्षमता प्राप्त हो, जिससे वे संदेश प्रसंस्करण, समस्या समाधान, निर्णय लेने, और अन्य कार्यों को संपादित कर सकें। इसका मतलब है कि AI कंप्यूटर और मशीनों को विशेष कार्यों को समझने और संभालने की क्षमता प्रदान करता है ताकि वे मानवों के समान निर्णय ले सकें।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कई प्रकार की होती है:

1. **सामान्य AI (AGI)**: यह वह AI है जो मानव जैसे स्तर पर सोचने और काम करने की क्षमता प्राप्त करती है। इसका मतलब है कि यह AI सामान्य ज्ञान और कौशल के अधिग्रहण कर सकती है, और विभिन्न कार्यों को समझ, समाधान करने, और संभालने की क्षमता रखती है।
2. **विशिष्ट AI (ASI)**: यह AI विशेष कार्यों के लिए तैयार किया जाता है और इसके लिए प्रोग्राम किया जाता है। इसका उदाहरण है विशेष समस्याओं का समाधान करने के लिए बनाई गई AI सिस्टम।
3. **संदृश्य AI (ANI)**: यह AI होती है जो निश्चित कार्यों का समाधान करने के लिए तैयार की जाती है, जैसे कि गेम खेलने, भाषा अनुवाद करने, और अन्य संदृश्य कार्य।
4. **कार्यात्मक AI (ANI)**: इस AI को परियोजना के लिए तैयार किया जाता है और यह विशिष्ट कार्यों को सम्पादित करने के लिए प्रोग्राम किया जाता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कैसे काम करता है ।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) AI) तकनीक कार्य करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करता है, जिनमें मशीन लर्निंग, न्यूरल नेटवर्क्स, अल्गोरिदम्स, संदर्भ आधारित निर्णय, और बिग डेटा विश्लेषण शामिल हैं। यहाँ, मुख्य तकनीकों का एक संक्षिप्त विवरण है:

1. **मशीन लर्निंग) Machine Learning)**: मशीन लर्निंग एक तकनीक है जिसमें कंप्यूटर सिस्टम को डेटा से सीखने की क्षमता प्रदान की जाती है। यह सीखने के दौरान आलेरिथ्म्स को परिभाषित डेटा के आधार पर अद्यतित किया जाता है ताकि वे संदेशों को समझ सकें, निर्णय ले सकें, और कार्य कर सकें।
2. **न्यूरल नेटवर्क) Neural Networks)**: न्यूरल नेटवर्क्स मानव मस्तिष्क के कार्यक्षेत्रों के रूपांतरण से प्रेरित हैं। इनमें एक बड़े संख्या में अनुक्रमिक

इकाइयों के संगठन किया जाता है, जिन्हें लेयरों में संगठित किया जाता है, और ये लेयर कार्य को समझने और सीखने में सहायक होते हैं।

3. **अल्गोरिदम्स) Algorithms)**: अल्गोरिदम्स AI के कार्यों को संचालित करने और समाधान करने में मदद करते हैं। ये विभिन्न कार्यों को पूरा करने के लिए विकसित किए जाते हैं, जैसे कि डेटा के विश्लेषण, निर्णय लेना, और संदेशों का समझना।

4. **बिग डेटा) Big Data) विश्लेषण**: बिग डेटा विश्लेषण AI के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें बड़े डेटा सेट को विश्लेषित किया जाता है ताकि विशिष्ट पैटर्न और जानकारी को प्राप्त किया जा सके।

5. **संदर्भ आधारित निर्णय) Context-Based Decision Making)**: यह तकनीक उपयोगकर्ता के संदर्भ और संदेशों के आधार पर निर्णय लेता है। यहाँ, AI प्राप्त जानकारी और पूर्वानुमानों का उपयोग करता है ताकि सही निर्णय लिया जा सके।

इन तकनीकों का संयोजन और उपयोग आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को विभिन्न कार्यों के लिए सक्रिय बनाता है, जैसे कि स्वतंत्रता, निर्णय लेना, और समस्या समाधान करना।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के पिता कौन है - AI के पिता कहलाने वाले कई व्यक्ति हैं, लेकिन अगर हम बात करें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास के प्रमुख योगदानों की तो, तीन नाम अहम हैं:

1. **जॉन मकार्थी) John McCarthy)**: उन्हें "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस "का शब्द आविष्कारक माना जाता है। उन्होंने 1956 में डार्टमाउथ कॉलेज में आयोजित एक सम्मेलन में इस शब्द का प्रयोग किया था।

2. **आलन ट्यूरिंग) Alan Turing)**: वे" ट्यूरिंग टेस्ट " के आविष्कारक हैं, जो कंप्यूटर की समझदारी का परीक्षण करने के लिए बनाया गया था। उन्होंने मशीन ज्ञान और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कई नए निर्देश दिए।

3. **हर्बर्ट साइमन) Herbert Simon)**: उन्होंने कंप्यूटर प्रोग्रामिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में काम किया, और उन्होंने बहुत से निर्देश प्रदान किए जो AI की विकास में महत्वपूर्ण साबित हुए।

ये तीनों वैज्ञानिकों ने मिलकर AI के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, और भी कई वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्ता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विकास में योगदान किया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत ।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की शुरुआत की जानकारी वास्तव में बहुत पुरानी है, लेकिन आमतौर पर 1956 को AI की शुरुआत के रूप में मानी जाती है। इस साल, जॉन मकार्थी (John McCarthy), हर्बर्ट साइमन (Herbert Simon), एलेन न्यूल (Allen

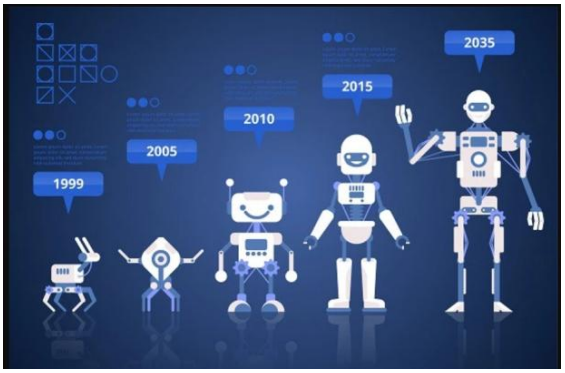

Newell), और आलन ट्यूरिंग (Alan Turing) जैसे वैज्ञानिकों ने डार्टमाउथ कॉलेज में आयोजित एक सम्मेलन में इस नए शाखा को लेकर चर्चा की थी। इसी कारण से 1956 को आमतौर पर AI की जन्म की तारीख मानी जाती है।

तथापि, AI और उसके संबंधित विचारों का विकास पहले भी हुआ था। एलेन ट्यूरिंग के विचारों और काम को विशेष रूप से महत्व दिया जाता है, जो 20वीं सदी के प्रारंभ में कंप्यूटर विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने 1936 में अपनी "ट्यूरिंग मशीन" की सिद्धांत को प्रस्तुत किया, जो आज भी कंप्यूटर विज्ञान का आधार है। इसके अलावा, विभिन्न वैज्ञानिकों और गणितज्ञों ने भी अपने अनुसंधानों में ऐसे तत्वों को विकसित किया जो बाद में AI के लिए आवश्यक होंगे।

सामग्री के रूप में, 1950 के दशक में एलेन ट्यूरिंग ने अपने अनुसंधान काम "शुरुआत में शुरू किया" जारी किया, जिसमें उन्होंने ज्ञान की वास्तविकता की चुनौती दी और कंप्यूटर के लिए सोचने की क्षमता को परखा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का फायदा है

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) AI) के कई फायदे हैं, जो इसे विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी बनाते हैं। यहाँ कुछ मुख्य फायदे हैं:

1. **संग्रहित ज्ञान का उपयोग**: AI डेटा को विश्लेषित करने और संग्रहित ज्ञान को प्रयोग करने में मदद करता है। यह ज्ञान को अधिक योग्यता से उपयोगी बनाता है और निर्णय लेने में सहायक होता है।

2. **स्वचालित कार्य**: AI स्वचालित कार्यों को संचालित करने की क्षमता प्रदान करता है, जो कार्य की कारगरता बढ़ाता है और मानव श्रम को कम करता है।

3. **संदेशों का अनुवाद**: AI संदेशों का अनुवाद करने में सहायक होता है, जिससे भाषा और संसाधन के बीच संचार में सुधार होता है।

4. **रोग निदान और उपचार**: AI चिकित्सा में रोगों का निदान और उपचार करने में सहायक होता है, जो निदान की सटीकता और उपचार की प्रभावक्षमता को बढ़ाता है।

5. **स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता का सुधार**: AI स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाता है और लोगों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारता है, जैसे कि डिजिटल स्वास्थ्य सेवाएं और चिकित्सा उपकरण।

6. **और भी अनेक फायदे**: AI के अन्य फायदे शिक्षा, संगठन, वित्त, निर्माण, और रोजगार के क्षेत्र में भी देखे जा सकते हैं।

सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में, AI के उपयोग से कार्य प्रक्रियाओं में नई सुधार किया जा सकता है, उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है, और नए और समृद्धिशाली समाधान विकसित किए जा सकते हैं।

क्या भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हानिकारक है ।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) AI) के प्रयोग की संभावित हानिकारक पहलुओं को लेकर विभिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं। यहां कुछ संभावित चुनौतियों का उल्लेख किया जा रहा है:

1. **नौकरियों का अपार नुकसान**: AI के विकास से कई जागरूकता है कि कुछ पेशेवर क्षेत्रों में नौकरियों का संक्षेप हो सकता है, क्योंकि कुछ कार्य अब कंप्यूटरों और रोबोटों द्वारा संचालित किए जा सकते हैं।

2. **गोपनीयता का संदेश**: AI और मशीन लर्निंग तकनीकों का उपयोग व्यक्तिगत डेटा के संचयन और विश्लेषण में किया जा सकता है, जो गोपनीयता की समस्याओं का सम्मुखिन हो सकता है।

3. **स्वार्थी उपयोग**: AI का दुरुपयोग हो सकता है, जैसे कि आत्मगर्दी, आतंकवादी गतिविधियों को संचालित करने के लिए, या अन्य अनैतिक कार्यों के लिए।

4. **संदेशों का भ्रष्टीकरण**: AI अवयवों का दुरुपयोग किया जा सकता है ताकि अनैतिक, असंवैधानिक, या अप्रासंगिक संदेश प्रसारित किए जा सकें।

5. **संवैधानिक और नैतिक मुद्दे**: AI के नियंत्रण और नैतिकता के संदर्भ में मानव समाज में उठने वाले मुद्दों को निपटने में संकट हो सकता है।

हालांकि, यह जरुरी है कि इन हानिकारक पहलुओं को संज्ञान में रखा जाए और समाधान ढूंढा जाए ताकि AI का उपयोग समाज के लाभ के लिए किया जा सके।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भविष्य

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)AI) का भविष्य बहुत ही रोशनीमय है, और इसमें कई रोमांचक और चुनौतीपूर्ण दिशाएं हैं। यहाँ कुछ मुख्य दिशाएं हैं जिनमें AI जा रहा है:

1. स्वास्थ्य सेवाएं: AI का उपयोग स्वास्थ्य सेवाओं में विस्तारपूर्वक होगा, जैसे कि रोगों के निदान, उपचार, और और सेवाओं के विकसित के लिए।

2. विज्ञान और अनुसंधान: AI के उपयोग से वैज्ञानिक और अनुसंधान क्षेत्रों में नए अविष्कारों के लिए नई संभावनाएं खुलेंगी।

3. शिक्षा: AI का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में भी बड़े परिवर्तन के लिए बनाए जा रहे हैं, जैसे कि व्यक्तिगत।कृत शिक्षा और स्वयं स्वीकृति आधारित शिक्षा।

4. संगठनों में कार्यप्रणालियों का सुधार: AI के उपयोग से व्यावसायिक कार्यप्रणालियों को सुधारा जा सकता है, जिससे कि कार्यक्षमता बढ़ती है और उत्पादकता में वृद्धि होती है।

5. वाहन संचालन: AI और स्वयं चलने वाले वाहनों के डेवलपमेंट में बड़ी गति हो रही है, जो यातायात सुरक्षा, सुगमता, और ऊर्जा की बचत में मदद कर सकते हैं।

6. संदर्भित और व्यक्तिगतीकृत सेवाएं: AI के उपयोग से संदर्भित और व्यक्तिगतीकृत सेवाएं बनाने में सहायता मिलेगी, जिससे उपयोक्ता की अवधारणाओं को समझा और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकेगा।

ये केवल कुछ उदाहरण हैं, और बहुत सारे अन्य क्षेत्र भी हैं जिनमें AI का उपयोग किया जा रहा है और जा रहा है। AI का भविष्य बहुत ही उत्साहजनक है, और इसके प्रयोग से विश्व के अनेक क्षेत्रों में सुधार हो रहा है।

नरेश कुमार ठागरिया
उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)

नवाचारी इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों का वित्त पोषण

आधुनिक युग में, विकास के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर की महत्ता निरंतर बढ़ती जा रही है। विभिन्न क्षेत्रों में नवाचारी प्रौद्योगिकियों और उत्पादकता की दिशाओं में उत्पन्न हो रही नई जरूरतों को पूरा करने के लिए, नए और नवाचारी इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों का वित्तपोषण महत्वपूर्ण है। वित्तीय संस्थानों का यह वित्तपोषण, विकास की योजनाओं को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और समाज में आर्थिक सुधार का माध्यम बनता है। नवाचारी इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों के वित्तपोषण का प्रमुख लक्ष्य नवीनतम प्रौद्योगिकी और उत्पादकता की समाप्ति करने वाले प्रोजेक्ट्स को धन प्रदान करना है। उन्हें उत्कृष्टता, दक्षता और प्रौद्योगिकी के माध्यम से उनकी सफलता की सटीकता के लिए निवेश की जरूरत होती है।

नवाचारी इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों में वित्तपोषण का पहला पहलू उत्कृष्टता और नवीनतम प्रौद्योगिकी के प्रोजेक्ट्स को सहायता प्रदान करना है। ये प्रोजेक्ट्स आमतौर पर अभिनव और नई जरूरतों को पूरा करने के लिए उत्पन्न होते हैं और उन्हें उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए नवीनतम तकनीक का उपयोग करते हैं। वित्तीय संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जब वे इन प्रोजेक्ट्स को समर्थन देते हैं, ताकि वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए आविष्कारों को संजोया जा सके और समाज को लाभान्वित किया जा सके।

दूसरी बात, वित्तपोषण के माध्यम से इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों को सामाजिक और आर्थिक सुधार का माध्यम बनाया जा सकता है। इन प्रोजेक्ट्स के माध्यम से अधिक संगठनों और व्यक्तियों को उत्पादित करने और वितरित करने के लिए नए और सरल तरीके मिल सकते हैं, जिससे उत्पादकता में वृद्धि होगी और नए रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। इसके साथ ही, इन प्रोजेक्ट्स के माध्यम से सामाजिक सेवाओं को भी सुधारा जा सकता है, जैसे कि विद्युत, परिवहन और संचार सुविधाएँ।

आखिरकार, इनोवेटिव इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों का वित्तपोषण आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। ये प्रोजेक्ट्स आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं, वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करते हैं और सामाजिक असमानता को कम करने में मदद करते हैं। इसलिए, वित्तीय संस्थानों को नवाचारी इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों के वित्तपोषण में भाग लेने का समर्थन करना चाहिए, ताकि हम सामाजिक और आर्थिक सुधार के माध्यम से एक सशक्त और समृद्ध समाज की दिशा में अग्रसर हो सकें। इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियों के लिए नए और नवाचारी इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों का विस्तार करने के कई प्रासंगिक क्षेत्र हैं। ये क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

1) **स्मार्ट सिटी और उपग्रेडेड इंफ्रास्ट्रक्चर**: स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ, जैसे कि अक्षम प्रशासन, शहरी विकास, और स्मार्ट ट्रांसपोर्ट, इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियों के लिए वित्तपोषण के योग्य हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियाँ भी वित्तपोषण प्रदान कर सकती हैं जैसे कि स्मार्ट जल, स्मार्ट ऊर्जा, और शहरी सुविधाओं के विकास के लिए।

2) **ऊर्जा और पर्यावरण संरक्षण:** सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा, और बिजली की नई तकनीकों पर निवेश करने से वित्तीय कंपनियाँ प्राकृतिक उपायों का बढ़ावा दे सकती हैं। पर्यावरण संरक्षण परियोजनाएँ जैसे कि वायु प्रदूषण और जल संरक्षण परियोजनाएँ भी वित्तीय संस्थानों के लिए महत्वपूर्ण हो सकती हैं।

3) **डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर:** डिजिटल संचार और ब्रॉडबैंड सेवाएँ के विकास के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियों का योगदान महत्वपूर्ण है। डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएँ जैसे कि डेटा सेंटर्स और साइबर सुरक्षा के लिए वित्तीय संस्थानों का समर्थन आवश्यक है।

4) **स्वास्थ्य और शिक्षा:** स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए वित्तीय संस्थानों का योगदान आवश्यक है। नई और नवाचारी अस्पताल, विश्वविद्यालय, और शिक्षा संस्थानों के लिए वित्तीय समर्थन प्रदान करने से वित्तीय कंपनियाँ सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती हैं।

5) **हाइवे और रेलवे नेटवर्क्स:** हाइवे और रेलवे नेटवर्क्स के विकास के लिए नए प्रोजेक्ट्स का निवेश करना भी एक संभावित क्षेत्र है। इसमें हाईस्पीड रेल, मेट्रो, ब्यूलेट ट्रेन्स, और हाईवे उपयोगिता शामिल हैं।

इन क्षेत्रों में निवेश करने से इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंस कंपनियों को विभिन्न सेक्टरों में नवाचार, उत्पादकता, और संवेदनशीलता के अवसर मिल सकते हैं। इन क्षेत्रों में निवेश करने से न केवल आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है, बल्कि समाज को भी नए सुविधाओं के लिए उपलब्ध किया जा सकता है। हडको द्वारा देशभर में आधारभूत सुविधाओं व् अधोसंरचना विकास की परियोजनाओं के साथ नवचारी क्षेत्रों में भी वित्तपोषण कर सहभागीदारी दी जार ही है |

श्रीमती गरिमा स्वामी
प्रबन्धक (परियोजना)

एक राष्ट्र - एक चुनाव

एक राष्ट्र-एक चुनाव की अवधारणा एक ऐसे परिदृश्य की कल्पना करती है जहाँ प्रत्येक पाँच वर्ष पर सभी राज्यों के चुनाव लोकसभा के आम चुनावों के साथ-साथ संपन्न होंगे। विचार यह है कि चुनावी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जाए और चुनावों की आवृत्ति को कम किया जाए, जिससे समय और संसाधनों की बचत होगी।

यह विचार वर्ष 1983 से ही अस्तित्व में है, जब निर्वाचन आयोग ने पहली बार इसे पेश किया था। हालाँकि वर्ष 1967 तक भारत में एक साथ चुनाव आयोजित कराना एक सामान्य परिद्रश्य रहा था। लोकसभा के प्रथम आम चुनाव और सभी राज्य विधानसभाओं के चुनाव 1951-52 में एक साथ आयोजित कराये गए थे। यह अभ्यास वर्ष 1957, 1962 और 1967 में आयोजित अगले तीन आम चुनावों में भी जारी रहा। किन्तु वर्ष 1968 और 1969 में कुछ विधानसभाओं के समय-पूर्व विघटन के कारण यह चक्र बाधित हो गया। वर्ष 1970 में स्वयं लोकसभा का समय-पूर्व विघटन हो गया और वर्ष 1971 में नए चुनाव आयोजित कराये गए। इस प्रकार, वर्ष 1970 तक केवल प्रथम, द्वितीय और तृतीय लोकसभा ने पाँच वर्ष का नियत कार्यकाल पूरा किया।

विश्व में अन्य जगहों पर एक साथ चुनाव:

- दक्षिण अफ्रीका में राष्ट्रीय और प्रांतीय विधानमंडलों के चुनाव एक साथ प्रत्येक पाँच वर्ष पर आयोजित किये जाते हैं, जबकि नगर निकाय चुनाव प्रत्येक दो वर्ष पर आयोजित किये जाते हैं ।
- स्वीडन में राष्ट्रीय विधानमंडल, प्रांतीय विधानमंडल/काउंटी कौंसिल और स्थानीय निकायों / नगरनिकाय सभाओं के चुनाव एक निश्चित तिथि, यानी हर चौथे वर्ष सितंबर के दूसरे रविवार को आयोजित किये जाते हैं।
- ब्रिटेन में ब्रिटिश संसद और उसके कार्यकाल को स्थिरता एवं पूर्वानुमेयता की भावना प्रदान करने के लिये निश्चित अवधि संसद अधिनियम, 2011 पारित किया गया था। इसमें प्रावधान किया गया कि प्रथम चुनाव 7 मई 2015 को और उसके बाद हर पाँचवें वर्ष मई माह के पहले गुरुवार को आयोजित किया जाएगा।

एक साथ चुनाव (Simultaneous Elections) या ONOE के विभिन्न लाभ:

- शासन विकर्षणों को कम करना: बार-बार चुनाव आयोजित होने से शीर्ष नेताओं से लेकर स्थानीय प्रतिनिधियों तक पूरे देश का ध्यान भटक जाता है। यह चुनावी व्यवस्था भारत की विकास संभावनाओं पर नकारात्मक प्रभाव डालती है और प्रभावी शासन में बाधा उत्पन्न करती है।
- आदर्श आचार संहिता का प्रभाव: चुनावों के दौरान लागू आदर्श आचार संहिता (Model Code of Conduct- MCC) राष्ट्रीय और स्थानीय दोनों स्तरों पर प्रमुख नीतिगत निर्णयों में विलंब का कारण

बनती है। यहाँ तक कि चल रही परियोजनाओं में भी बाधा उत्पन्न होती है क्योंकि चुनाव संबंधी कर्तव्यों को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे नियमित प्रशासन में सुस्ती आ जाती है।

- राजनीतिक भ्रष्टाचार को संबोधित करना: बार-बार चुनाव का आयोजन राजनीतिक भ्रष्टाचार में योगदान करते हैं क्योंकि प्रत्येक चुनाव के लिये उल्लेखनीय मात्रा में धन जुटाने की आवश्यकता होती है। एक साथ चुनाव कराने से राजनीतिक दलों के चुनाव खर्च में व्यापक कमी आ सकती है, जिससे बार-बार धन जुटाने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। इससे आम लोगों और व्यापारिक समुदाय पर बार-बार चुनावी चंदा देने का दबाव भी कम हो जाएगा।

- लागत बचत और चुनावी अवसंरचना: वर्ष 1951-52 में जब लोकसभा के प्रथम चुनाव आयोजित हुए तो इसमें 53 राजनीतिक दलों और लगभग 1874 प्रत्याशियों ने भाग लिया तथा चुनाव का व्यय 11 करोड़ रुपए रहा। वर्ष 2019 के आम चुनाव में 610 राजनीतिक दलों और लगभग 9,000 उम्मीदवारों ने भागीदारी की। एसोसिएशन ऑफ डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (ADR) के अनुसार लगभग 60,000 करोड़ रुपए के चुनावी खर्च पर राजनीतिक दलों अभी घोषणा किया जाना शेष है। हालाँकि अवसंरचना में आरंभिक निवेश की आवश्यकता होती है, लेकिन सभी चुनावों के लिये समान मतदाता सूची का उपयोग करने से मतदाता सूचियों को अद्यतन करने और बनाए रखने में लगने वाले समय एवं धन की बचत हो सकती है।
- नागरिकों को सुविधा: एक साथ चुनाव होने से मतदाता सूची से नाम गायब के संबंध में नागरिकों की चिंताएँ कम हो जाएँगी। सभी चुनावों के लिये सुसंगत मतदाता सूची का उपयोग प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है, जिससे नागरिकों को अधिक प्रत्यक्ष एवं भरोसेमंद मतदान अनुभव प्राप्त होता है।
- कानून प्रवर्तन संसाधनों का इष्टतम उपयोग: चुनावों के दौरान पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों की बड़े पैमाने पर बार-बार तैनाती में उल्लेखनीय लागत आती है तथा प्रमुख कानून प्रवर्तन कर्मियों का अत्यंत महत्वपूर्ण कार्यों से विचलन होता है। एक साथ चुनाव से बार-बार तैनाती की कमी होगी, संसाधनों का इष्टतम उपयोग होगा और कानून प्रवर्तन दक्षता बढ़ेगी।
- 'हॉर्स -ट्रेडिंग' पर अंकुश: निश्चित अंतराल पर आयोजित चुनावों से निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा हॉर्स ट्रेडिंग या खरीद-फरोख्त को कम किया जा सकता है। निश्चित अवधियों पर चुनाव कराने से प्रतिनिधियों के लिये व्यक्तिगत लाभ के लिये दल बदलना या गठबंधन बनाना अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाएगा, जो मौजूदा दल-बदल विरोधी कानूनों को पूरकता प्रदान करेगा।

- राज्य सरकारों के लिये वित्तीय स्थिरता : बार-बार चुनावों के कारण राज्य सरकारें मतदाताओं को लुभाने के लिये मुफ्त सुविधाओं या 'फ्रीबीज़' की घोषणा करती हैं, जिससे प्रायः उनके वित्त पर दबाव पड़ता है। एक साथ चुनाव का आयोजन इस समस्या को कम कर सकता है, राज्य सरकारों पर वित्तीय बोझ घट सकता है और वृहत वित्तीय स्थिरता में योगदान प्राप्त हो सकता है।

एक साथ चुनाव (Simultaneous Elections) या ONOE से जुड़ी चुनौतियाँ :

- ONOE को लागू करने में लॉजिस्टिक संबंधी चुनौतिया : ONOE के कार्यान्वयन में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों, कर्मियों और अन्य संसाधनों की उपलब्धता एवं सुरक्षा सहित महत्त्वपूर्ण लॉजिस्टिक संबंधी चुनौतियाँ शामिल हैं।
- संघवाद संबंधी चिंताएँ और विधि आयोग के निष्कर्ष :ONOE की अवधारणा संघवाद (federalism) की अवधारणा से टकराव रखती है | यह संविधान के अनुछेद 1 में भारत को 'राज्यों के संघ' (Union of States) के रूप में देखने के विचार के विपरीत है। एक साथ चुनाव राज्य सरकारों की स्वायत्तता और स्वतंत्रता पर हमला है। इससे न केवल संघीय ढाँचा कमज़ोर हो सकता है बल्कि केंद्र और राज्यों के बीच हितों का टकराव भी बढ़ सकता है।
- चुनावों की पुनरावृत्ति और लोकतांत्रिक लाभ: बार-बार आयोजित चुनावों की वर्तमान प्रणाली को लोकतंत्र में लाभप्रद माना जाता है, जिससे मतदाताओं को अपनी आवाज़ अधिक बार व्यक्त करने की अनुमति मिलती है।
- पक्षपातपूर्ण लोकतांत्रिक संरचना: IDFC इंस्टिट्यूट के वर्ष 2015 के एक अध्ययन में उजागर हुआ कि एक साथ चुनाव से इस बात की 77% संभावना बनती है कि विजयी राजनीतिक दल या गठबंधन को लोकसभा और राज्य विधानसभाओं दोनों में जीत प्राप्त होगी।

- लागत निहितार्थ और आर्थिक विचार: हालाँकि दीर्घावधि में सिंक्रनाइज़ेशन से प्रति मतदाता लागत में बचत हो सकती है, लेकिन बड़ी संख्या में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVMs) और वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल्स (VVPATs) की तैनाती के लिये लघु-आवधिक खर्च बढ़ सकता है।

श्रीमती रेनू चौधरी
प्रबन्धक (वित्त)

जयपुर में अजीबो-गरीब नाम वाली जगहें जिन्हें देखकर आप हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाएंगे

दिल्ली एनसीआर के करीब अरावली पहाड़ियों से घिरा एक शहर है जयपुर । यह लगभग 300 वर्ष पुराना है और इसमें विशाल किले, चमकदार शाही महल और यात्रियों से भरी आकर्षक सड़कें हैं। और यह जयपुर में भ्रमण का एक सरल विवरण है।

भारत के गुलाबी शहर के रूप में जाना जाने वाला जयपुर, राजस्थान राज्य का सबसे बड़ा शहर है। यह राजस्थान की राजधानी है। यह भारत की पहली प्लैन्ड सिटी है | इसका निर्माण सवाई जयसिंह द्वितीय ने 1727 ई. मे करवाया था और इसे बनने मे केवल 4 वर्ष का समय लगा था | हवा महल, जल महल, आमेर किला, जंतर मंतर और घूमने लायक कुछ अलग जगहों के लिए मशहूर जयपुर के पास बताने के लिए कई कहानियां हैं। यहां तक कि जयपुर की सड़कों, किलों, महलों और बाजारों की भी अपनी कहानियां, तथ्य और यहां तक कि मिथक भी हैं जो इसे और अधिक असाधारण बनाते हैं।

जयपुर के राजा ने ढूंढाड़ क्षेत्र के आस-पास के गांवों से आए लोगों को चारदीवारी में बसाया था। परिवारों के काम करने की कला के हिसाब से उन्हें काम दिए गए और आगे चलकर जयपुर के मुख्य रास्तों के नाम इन्हीं परिवारों के मुखिया या परिवारों के नाम पर प्रसिद्ध हो गए। आइए आज आपको परकोटे के जयपुर ले चलते हैं और बताते हैं इन अजीबोगरीब नामों के पीछे की कहानी

सांगानेरी गेट, जौहरी बाजार

रामलला जी का रास्ता – जौहरी बाजार के इस रास्ते का नाम एक मंदिर की वजह से पड़ा। भगवान राम का बाल्यावस्था मूरत में यहां एक मंदिर बना हुआ है जिसके चलते इस रास्ते को रामलला जी का रास्ता कहा गया।

पीतलियों का रास्ता – राजा के समय में इस रास्ते में पीतल के बर्तन बनाए जाते थे जिसके लिए राजा ने कई कारखाने भी लगाए थे। आगे चलकर इस नाम से इस रास्ते को पहचाना गया।

हल्दियों का रास्ता – जब राजस्थान में रियासतों का राज था तब उस समय के महाराजा ने यहां हल्दियां हाउस का निर्माण करवाया था जिसके बाद इस रास्ते का हल्दियों का रास्ता नाम पड़ गया।

घी वालों का रास्ता – राज के शासनकाल में यहां घी का कारोबार होता था जिसकी वजह से इस रास्ते को घी वालों का रास्ताकहा गया।

ठठेरों का रास्ता – ठठेरा समाज के लोगों को राजा के शासनकाल में काफी मान-सम्मान मिला। राजा ने ठठेरा समाज के लोगों को परकोटे में रहने के लिए जगह दी। ठठेरे चांदी, कांसा, पीतल के बर्तन के कारीगर थे।

मणिहारों का रास्ता – चूड़ी बनाने वाले परंपरागत कारीगरों को मणिहारी कहा जाता है। राजा के दौरान यहां चूडी-पाटला बनाने वाले कारीगर रहा करते थे जिसके बाद इस रास्ते का नाम ही मणिहारों का रास्ता पड़ गया।

लालजी सांड का रास्ता – जयपुर के पूर्व राजा माधोसिंह के बेटे लालसिंह पर वैध ने एक नई आयुर्वेदिक दवाई के नुस्खे का पहली बार प्रयोग किया, जिससे बाद अचानक से उसका शरीर बढ़ने लगा और वो ताकतवर हो गया। हर किसी को मारने लगा और उठाकर पटकने लगा। माधोसिंह ने इस समस्या से निपटने के लिए इस इलाके में उस समय एक जेल का निर्माण करवाया जहां लालसिंह को कैद रखा गया। चूंकि लालजी सांड चौड़ा रास्ता के पास रहते थे, इसलिए उस गली को लालजी सांड का रास्ता के नाम से जाना जाने लगा।

फूटा खुरा - कुछ किवदंतियों के अनुसार, लालजी

सांड रामगंज चौपड़ इलाके में रहता था। इसकी तीव्र ढलान के कारण, भारी बारिश में पानी का बहाव बड़ी चौपड़ से रामगंज क्षेत्र तक लोगों के मार्ग को प्रतिबंधित कर देगा। इसे दूर करने और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए लालजी के आवास की ओर एक मार्ग का निर्माण किया गया। हालाँकि उनकी मृत्यु के बाद, शहर प्रशासकों ने जलमार्ग की मरम्मत करना बंद कर दिया और इसकी मरम्मत नहीं की गई और इसके बाद पूरे इलाके को फूटा खुरा कहा जाने लगा।

अजमेरी गेट से छोटी चौपड़ तक

टिक्कीवालों का रास्ता – महाराजा के शासनकाल के दौरान सेठ-साहूकारों का बोलबाला था। उन्हें विशेष व्यवस्था देने के लिए गांवों से शहर लाकर बसाया जाता था। साहूकार ब्याज पर टके यानि पैसे दिया करते थे।

खूंटेटों का रास्ता – जयपुर के बसने के समय से ही इस एरिया में खंडेलवाल समाज के लोग रहते थे, इसके अलावा यहां खूंटेटा समाज का पुराना मंदिर भी है।

टिक्कड़मल का रास्ता – सालों पहले यहां पर एक व्यक्ति मोटी रोटी का टिक्कड़ बनाकर बेचता था

इस वजह से इसका नाम टिक्कड़मल का रास्ता पड़ा।

खजाने वालों का रास्ता - खजाने वालों का रास्ता चांदपोल और छोटी चौपड़ के बीच स्थित है। इसका नाम खजांची लोगों के समूह के नाम पर रखा गया है जो महाराजा की तिजोरी की देखभाल करने वाले थे और यहां रहने आए थे। यह अब पारंपरिक संगमरमर हस्तशिल्प वस्तुएं, परिधान, दर्जी और कपड़े की दुकानें के लिए जाना जाता है |

बारह भाइयों का चौराहा - चारदीवारी वाले शहर में एक अनोखा चौराहा, छोटी चौपड़ से गणगौरी बाज़ार की ओर आगे बढ़ने पर, पहला बायाँ मोड़ चौराहे की ओर जाता है जो उन 12 दोस्तों की कहानी बताता है जो हर शाम इस चौराहे पर मंदिर में मिलते थे। वर्षों तक एक-दूसरे के प्रति उनके प्रेम के कारण, इस स्थान को बारह भाइयों का चौराहा के नाम से जाना जाने लगा।

आशा करती हूँ कि उपरोक्त जानकारी आपको अच्छी लगी होगी एवं आपके होंठों पर एक स्मित सी मुस्कान अवश्य ले आई होगी |

श्रीमती अंजू गर्ग
वरि. प्रबन्धक (सचि.)

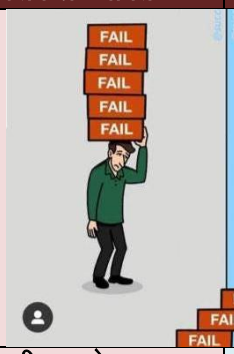

असफल व्यक्ति	सफल व्यक्ति
दूसरो की आलोचना करते है	दूसरो की हमेशा ही सराहना करते है
मन में दुश्मनी पाल के बैठ जाते है	सबको माफ कर देते है
सिर्फ अधिकार की बात करते है,कर्तव्य की नही	अपनी गलतियों की जिम्मेदारी स्वंय लेते है
अपनी असफलता का कारण दूसरों को बताते है	सबको खुश और जीतने देखना चाहते है
सारा समय ब्यर्थ कामों में लगाते है	दूसरो के प्रति आभार प्रकट करते है
बदलाव से डरते है	अपनी सफलता का श्रेय सब में बाटते है
जमीनी हकीकत से दूर,अति उत्साहित रहते है	रोज कुछ नया पढते है
दूसरो के बारे में बाते करते है	अपने विचारो को साझा करते है
अपना ज्ञान किसी में नही बॉटते	खूशी बॉटते है
हर वत्त गुस्से मे रहते है	परिवर्तन लाते है
उन्हें लगता है की वो सब कुछ जानते है	अपने हर कार्य की रखते है
हर चीज में फायदा और नुकसान देखते है	हमेशा लक्ष्य बनाते है
मन ही मन दूसरों की असफलता चाहते है	अपने आप मे सुधार लाने का नजरिया लाते है और लगातार नया सीखते है

श्री अनिल कुमार खण्डेलवाल

बचत भी कमाई है .....

रविवार का दिन था. दीपक और स्नेहा सुबह से ही दिमाग खराब किए बैठे थे. दोनों का एक-दूसरे पर दोषारोपण खत्म नहीं हो रहा था. जिद्व और बहस में घंटों बीता दिए. मुद्दा बजट को लेकर था. दीपक सर पर हाथ रख कर बैठा था. स्नेहा से शिकायत भरे लहजे से कह रहा था-डेढ़ लाख की सेलेरी आती है फिर भी घर के जरूरी सामान लाने में झिक-झिक करनी पड़ती है और बचत के नाम पर तो यहाँ जीरो अण्डा है. स्नेहा के तेवर चढ़ गए और बोली मुझे ऐसे क्या देख रहो हो?मैं कौनसा तुम्हारे पैसे लुटा रही हूँ?

दीपक ने कहा-गुस्सा या नाराज होने वाली बात बिल्कुल नहीं है बल्कि यह सोचने वाली बात है. मेरे साथ के बंदों को भी इतनी ही सेलेरी मिलती है और सभी का अपना घर भी है और हमसे ज्यादा और अच्छा स्टेण्डर्ड मेंटेन किया हुआ है. जबकि हम सालों से किराए के मकान बदल-बदल कर रह रहे हैं. हम यह सब आज तक नहीं कर पाए है.

जी हाँ! ऐसी मिलती-जुलती समस्याएं बहुत से घरों में पैदा होती दिखाई देती है. मुश्किलें तब बढ़ जाती है जब कमाई-खर्चा-बचत में संतुलन व बजट बनाकर नहीं चलते है. अप्रत्याशित विकट परिस्थितियों में यह संतुलन भी बड़े काम आता है.

दीपक दूसरे दिन ऑफिस में उदास था. काम-काज में दिल नहीं लग रहा था. कागज-पेन उठाकर जब खर्चों का मंथन करने लगा तो उसे एक के बाद एक झटके लगते गए. कई खर्चे तो वाकई में बिल्कुल जरूरी नहीं थे. उन खर्चों पर जरा सी रोक भी लग जाती तो हिसाब से उसके पास लाखों रूपयों की बचत हो सकती थी. इसी द्वंद्व में शाम को बोझिल सा घर पहुँचा.

स्नेहा बुझा-बुझा चेहरा देख कर बोली! क्या?अभी भी सुबह की बात को लेकर बैठे हो. महंगाई भी तो देखो कितनी बढ़ गई इसमें हम क्या करेंगे? दीपक बोला अभी थोड़ी देर आराम करूंगा फिर बात करते है. आराम कहां था. वह सोच रहा था कहाँ और कैसे यह समस्या आई. बिना सोचे-समझे कहाँ-कहाँ गलतियां किए जा रहे है. अब जो हो गया सो हो गया. सबसे पहले अब समस्या और उसका समाधान ढूंढ़ना है.

रात्रि भोजन करके दीपक ने स्नेहा को आवाज दी. मैं बाहर खड़ा हूँ, आ जाओ टहलकर आते है. दो मिनट में स्नेहा घर के दरवाजे पर ताला लगाकर आ गई. दीपक ने एक-दो कदम बढ़ाए ही थे कि वापस दो कदम उलटे पैर चला और घर की ओर देखा. स्नेहा भी ऐसा देखकर हक्की-बक्की रह गई, बोली क्या हुआ? मैनें घर का दरवाजा अच्छी तरह से देखकर बंद किया है. दीपक बोला चलो घर चलते है. घर के अंदर ही बात करेंगे. स्नेहा मन ही मन बड़बड़ाने लगी पता नहीं क्या हो गया है इन्हें दो दिन से मूड़ खराब कर रखा है.

घर में घुसते ही दीपक ने स्नेहा से कहा जरा कागज-पेंसिल ले आओ. वह भुनभुनाती हुई बोली-अब अचानक रात को क्या हो गया है.चैन ही नहीं लेने देते हो. इतना सुनते ही दीपक का पारा चढ़ गया. तनिक गुस्सा होते हुए धीमी आवाज में बोला-जिंदगी भर से चैन ही तो ले रहे है हम लोग और कर ही क्या रहे है.

मुंह फुलाकर स्नेहा ऊँची आवाज में टी. वी. चलाकर बैठ गई. दीपक बोला देखो गुस्सा होने वाली कोई बात नहीं है. पिछले सालों से हम कितनी सारी छोटी-छोटी गलतियां करते आ रहे हैं जबकि उन पर हमको समय रहते ही ध्यान दे देना चाहिए था. इधर आओ और देखो हमारे तीन कमरे के मकान का बिजली का बिल छः-सात हजार के आस-पास आता है. जब जागो तभी सवेरा है. तुम यहाँ बैठ कर टीवी देख रही हो उधर रसोई और सिढ़ियों की लाईट बिलावजह जल रही है और तो और जब भी टहलने जाते है घर की लाईटें जलती छोड़ जाते है. इस ओर मेरा आज ही ध्यान गया है. हमारे घर का बिल दो-ढ़ाई हजार तक हो सकता है. घर में बिला वजह कमरों की बत्तियां जलती रहें बिल भारी आए तो सरकार को या महंगाई को कोसना कहां तक उचित है.

आगे दीपक ने गणित-जोड़ लगानी शुरू कर दी. स्नेहा के आलसीपन के कारण महीने में 15 दिन बाहर रेस्टोरेंट व होटल में खाना खाने जाते है. अब तो बच्चों को भी घर के भोजन का स्वाद गुम सा हो गया है. स्नेहा की जिद्द के कारण वीकेंड पर तो अधिकतर पूरा दिन बाहर का ही दौर रहता है. यहां वेतन का तीसरा हिस्सा आराम से इस खर्चे में शामिल हो जाता था. मौसमी फल व सब्जियों के बजाए बच्चों के लिए पिज्जा, मोमोज, चाउमिन, बर्गर व फास्टफूड आदि यह सब महत्त्वपूर्ण भोजन में शामिल हो गया है जबकि यह सब शरीर के लिए कोई फायदेमंद भी नहीं है. दांतों से काटकर खाना या गन्ना चबाना आज गुजरे जमाने की बाते सी हो गई है. यह सब बच्चे जानते भी नहीं है.

वह सोच रहा था. स्नेहा पूरे दिन घर पर ही रहती है और पूरी तरह स्वस्थ भी है. जिस पर भी उसने खाना बनाने वाली, झाड़ू-पौछा बर्तन वाली, कपड़े धोने के लिए बाई, 10-20 पौधों को सहेजने व पानी देने के लिए माली और प्रेस करने के लिए धोबी जबरदस्ती लगवाया हुआ था. घर के काम इतने भी भारी नहीं है. गुन्नू अभी पांचवी कक्षा और गिन्नी पहली कक्षा में ही तो पढ़ रही है. वह जानता था उसके ऑफिस और बच्चों के स्कूल जाने के बाद स्नेहा टी. वी., मोबाईल और पड़ोसनों के साथ

गपशप में ही बिता देती है. उसके खुद के पास पन्द्रह हजार तक का मोबाईल था लेकिन स्नेहा ने लड़-झगड़ कर पूरे पैतीस हजार का मोबाईल खरीदा और तीन साल पहले तो उसने खुद ही 70 इंच का टीवी ऑन लाईन आर्डर कर दिया जिसका भुगतान दीपक ने कैसे किया वो ही जानता है. बेचारा पुराना टीवी भी अच्छी हालत में था जो आज भी वैसा का वैसा कोने में रखा है.

उसने स्नेहा से धीरे से कहा-देखो! ऐसा है! तुम इसे गलत मत लो और समझो. घर हमारा अपना ही है और हमें ही इसे बेहतर चलाना है. मैं कोई उलाहना नहीं दे रहा तुम्हें लेकिन घर की आधी जिम्मेदारी तुम्हारी भी है. दीपक स्नेहा के गुस्सेल व्यवहार से कतराता था लेकिन उसने हिम्मत करके कहा-देखो! तुम पढ़ी-लिखी और समझदार हो. तुम्हें तो मालूम ही है कि आगे कितने बड़े-बड़े खर्चे और आने वाले है. अपना सुनियोजित घर, बच्चों की पढ़ाई और अच्छा भविष्य हमारा सपना है. अभी हम बिल्कुल खाली से है बचत के नाम पर, कोई ना कोई रास्ता तो हमें खुद ही निकालना पड़ेगा क्योंकि आमदनी का साधन एक मात्र मेरी नौकरी ही है.

वह उछल कर बोली इसमें मैं क्या करूं? और क्या कर सकती हूँ? दीपक चाह रहा था कि स्नेहा खुद ही कोई समाधान निकाल कर सामने रख दें लेकिन स्नेहा भी कम नहीं है स्टेटस के चक्कर में नाहक ही उसने पैसों और खुद के शरीर का कबाड़ा किया हुआ है.

दीपक ने धीरे से कहा देखो स्नेहा! यह जानते हुए कि सरकारी स्कूल भी प्राईवेट स्कूलों की शिक्षा से बेहतर और उच्च कोटि की शिक्षा देते है, बावजूद इसके तुम्हारी इच्छा के अनुसार केवल दिखावे के लिए अपने बच्चों को मोटी रकम वसूलने वाले प्राईवेट स्कूलों में एडमिशन दिलवाया है.

दादा-दादी और नाना-नानी का दुलार, आशीर्वाद व प्रेम बच्चों को भी चाहिए लेकिन हम ही है कि उनके यहाँ नहीं जाकर, जब भी छुट्टी मिलती है कहीं दूर जाकर घूमने का प्रोग्राम साल में दो बार तो बना ही लेते है. बच्चे कब से कह रहे है दादा-दादी और नाना-नानी के घर जाने के लिए और हम उनको अनसुना करते आ रहे हैं. फिर कैसे अपनापन, सम्मान और सुशिक्षित संस्कार जिंदा रह पाएंगे, और अब तो तुम देश से बाहर ट्रिप मनाने की कुछ सालों तक सोचना भी बंद करो.

सारी गलती तुम्हारी ही नहीं, मेरी भी गलतियां है. आस-पास सामान लाने या छोटा-मोटा काम के लिए मैं खुद गाड़ी उठा कर ले जाता हूँ. वैसे मैं सुबह मोर्निंग वाक के लिए दौड़ता हूँ लेकिन दो-चार कदम पैदल चलने में मुझे जोर आ जाता है. इससे नाहक ही पेट्रोल का भार बढ़ जाता है और फिर दोष पेट्रोल और खर्चें को देता हूं, और तो और अपने बगल वाले घर से मनीष भी तो मेरे ही ऑफिस में जाता है. कितनी बार कहा है उसने साथ चलने को लेकिन मैं हूँ कि अकेला ही कार

लेकर जाता हूँ. दोस्तों के साथ जाकर गाहे-बगाहें कैफे में जाकर टाईम पास के लिए चाय-कॉफी पी आता हूं जिसे मुझे अब कम करना होगा.

दीपक मुस्कुराते हुए कह रहा था पहले होली दिवाली पर ही नए कपड़ों के लिए पूरा एक साल इंतजार करते थे लेकिन अब शौक और फैशन के चक्कर में हर रोज बदल-बदल कर महंगी और अनावश्यक कपड़ों की खरीदी साल भर करते रहते है जबकि वो पूरी तरह काम में भी नहीं आ पाते है. फिटिंग के नहीं रह जाने, कपड़ों से मन भर जाने या नई डिजाईन के चक्कर में एक के बाद एक नई ड्रेसेज बनवाने के पीछे पड़ जाते है जोकि हर रोज बदलती रहती है. फिर बिना मन से किसी ओर को देने पड़ते है या फिर घर में ही कबाड़ के रूप में पड़े रहते हैं.

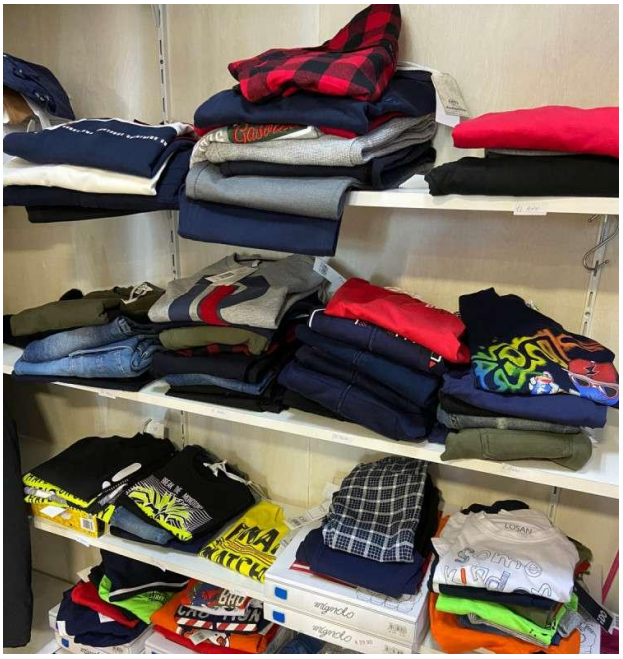

सही ही है, बच्चे भी वही सीख रहे है जो हम उन्हें सीखा रहे हैं क्योंकि उन्हें अच्छी सुविधाएं देने के चक्कर में हमने कभी उन्हें रोका-टोका नहीं और ना ही कभी समझाने की कोशिश भर भी की हो. यदि कॉपी या रजिस्टर में 5-6 पन्ने भर लिए तो उसे एक ओर रख देंगे और तो और रफ कॉपी के लिए भी बच्चों को दूसरा नया रजिस्टर और कॉपियां तुरंत चाहिए. अगली कक्षा में आने पर सिनीयर की किताबों के प्रयोग करने में बच्चे खुद को छोटा महसूस करते है उन्हें उनके प्रयोग में शर्म आती है और नई पुस्तकें खरीदवाकर ही मानते है, भले ही मुफ्त में मिलें लेकिन नहीं मानते. उन्हीं पुस्तकों के लिए महंगी कीमत चुकानी पड़ती है. बच्चों को शिक्षित और जागरूक करना ही चाहिए कागज बनाने में कितने पेड़ों और वृक्षों की हानि होती है. कितने संसाधन अनजाने ही हम बर्बाद कर रहे है. इनका दुरूपयोग करने से बचना चाहिए.

छोटी-छोटी जरूर है लेकिन है बड़े ही काम की बाते. लापरवाही, आलसीपन, दिखावे या सर्वश्रेष्ठ दिखने के चक्कर में हम अनजाने ही गैर जरूरी खर्चों को खुद ही जरूरत के नाम पर लादते रहते हैं. बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है, यह बिल्कुल सही है और भारतीय संस्कृति व संस्कारों में इसकी महत्ता भी कम नहीं है. फ्रीज के लिए अनावश्यक फल-सब्जियां खरीद कर भर लेना और बाद में अनुपयोगी रह जाने पर फैंक देना. अनाजों का अधिक से अधिक भण्डारण करके रख लेना, कीड़े आदि लग जाए तो फैंक देना या किसी को दे देना. होड़ा-होड़ी में अस्थाई उपहारों का मायाजाल और अनगिनत लेन-देन, त्यौहारी सीजन में अवांछित खर्ची आदि समय और पैसा दोनों का दुरूपयोग है जिस पर अंकुश लगना ही चाहिए. शिक्षा, चिकित्सा और कपड़ो में वेतन का एक बहुत बड़ा हिस्सा वैसे ही चला जाता है और ऊपर से छुट-पुट बिना काम के खर्चों पर अंकुश नहीं लगे तो यहां भी विशाल खर्चों का एक कारण उभर कर आ जाता है.

बचपन में मैनें डाईंग पेंटिंग बहुत सीखी और की भी थी. स्टेट लेवल पेंटिंग एक्जीबिशन में मैनें बड़े-बड़े पेंटिंग के फ्रेम लगाए थे और कई पुरस्कार भी जीते थे लेकिन छोटी-छोटी चीजों के लिए आज ब्रश उठाने में शर्म महसूस होती है. पिछले दिनों ही तो बात है, रसोई के सिंक का नल ठीक करवाने के चक्कर में छोटी सी टूट-फूट हुई जो कारीगर तो ठीक कर गया लेकिन दो-तीन फीट की दीवार को अच्छा दिखाने के लिए पेंटर पेंट करने के हजार रूपए ले गया जबकि बचपन में मैनें अपने पापा-मम्मी को घर के कमरों का रंग अपने हाथों से करते देखा था और मैं अपनी मनमानी करके अपना कमरा खुद अपनी पसंद से रंगा करता था.

यह सही है कि हर काम हर व्यक्ति द्वारा नहीं किए जा सकते है और ना ही यह जरूरी है कि हर कोई सब चीजों में निपुण या पारंगत हो लेकिन कर सकने वाले जो काम आमतौर पर सामान्यतः किए जा सकते हैं उनसे कभी भी मुंह नहीं मोड़ना चाहिए. यहाँ किसी भी वर्ग का रोजगार कम करने की मंशा नहीं है लेकिन बजट नहीं है, आय का साधन सीमित है और यदि समय भी है, स्वस्थ भी है और कर सकते है तो जहाँ तक हो सके काम खुद ही कर लेने की क्षमता बनाए रखना चाहिए. जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारे जाए तो खुशहाल रहने के लिए बचत के छोटे-छोटे रास्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं.

दीपक ने स्नेहा से कहा-स्नेहा हम दोनों मिलकर घर के काम निपटा सकते है. ऐसा नहीं है मुझे कुछ नहीं आता. जब मैं हॉस्टल में रहा था तब दोस्तों के साथ मिलकर कमरा साफ किया करता था. खाना भी कभी-कभी हम सब मिलकर बनाते थे. बड़ा ही आनन्द आता था. नौकरी के बाद अधिकतर मुझे बाहर ही रहना होता था. कमरे में खुद का खाना मैं खुद ही बनाता था. अब सब आदत मुझसे ना जाने क्यों छूट गई. वह बोला-छोटा सा तो घर है अपना, अगले महीने से हम दोनों मिल कर घर का काम निपटा लिया करेंगे. स्नेहा के उलट जवाबदारी से डरता हुआ और स्नेहा के सहयोग पूर्ण व्यवहार की मंशा से बात को संभालते हुए बोला-ऑफिस जाने से पहले काफी काम मिलकर खत्म कर लेंगे जिससे तुम भी जल्दी ही फ्री हो जाओगी.

यह बात स्नेहा को भी ग्लानि से भर गई. कुछ कह तो नहीं सकी लेकिन अधूरे मन से ही सही वह महसूस करने लगी, कहीं न कहीं उससे भी जानबूझ कर बहुत गलतियां हो ही रही है. वो तो दीपक ने बड़ी समझदारी से बात रख दी. दीपक के इस सहयोगात्मक व्यवहार से खुद को दीपक की पत्नी होने में गर्व सा महसूस कर रही थी.

अब स्वयं भी जोड़-तोड़ में लग गई और सोचने लगी...जिस दिन बाई नहीं आती, वह घंटो उसका इंतजार में बैठकर बिता देती है. उस दिन घर में झाड़ू-पौंछा तक नहीं लगता. सिंक के ऊपर तक बर्तन झूलते रहते है. कोशिश रहती है बाई ही आकर धोएगी क्योंकि उन्हें पैसे जो देते है. धोबी नहीं आए तो दस फोन कर देंगे और पड़ोसिनों के साथ बैठकर इन सबसे हुई समस्याओं का बखान एक-दूसरे से करके पूरा दिन यूं ही निकाल देती है.

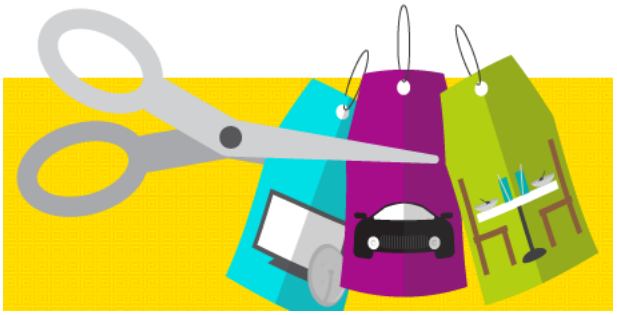

स्नेहा को एहसास हो रहा था देखा-देखी व मौहल्लें में स्टेटस रखने के लिए वाकई में शरीर और पैसों का बहुत कुछ कबाड़ा हो चला है. वह सोच रही थी मैं घर पर ही रहती हूं तब भी काम से दूर भागती हूं और एक दीपक है जो नौकरी व बाहर के कामों के अलावा मेरे साथ घर के कामों में भी हाथ बंटाने की बात कर रहा है.

बहुत जगह फिजूल खर्ची उसे नज़र आने लगी थी. वाकई दूसरों पर कितना निर्भर हो गए है, आत्मनिर्भरता स्वतः ही कहीं अनजाने खो रही है. उसने अपने मन को मजबूत करते हुए निश्चय किया कि बातों में घंटों खराब करने और पड़ौसिनों से इधर-उधर की बातों में अब ज्यादा समय जायज नहीं करके खुद ही घर के कामों को करना शुरू करेगी. मोबाईल और टी वी चेनलों के वेब जाल में उलझ से गए है. इनके आगे से हटने का मन ही नहीं करता. समय कहां खो जाता है आभास ही नहीं होता.

स्नेहा को आभास हो रहा था... मम्मी के भोजन बनाने का तरीका बड़ा ही उच्चतम रहा है। घर में भोजन ढक कर बनाया जाता था जिससे खाना जल्दी और गुणवत्ता से बन सकें। आज गैस ने काम आसान कर दिए है लेकिन बढ़ते दामों के साथ हम अपनी लापरवाही भी कम नहीं कर रहे है. हमने अपने तरीके बेडोल कर लिए है. खुले बर्तन में घंटों पकता भोजन या अनावश्यक गैस को चालू छोड़ना कहीं न कहीं आंशिक रूप से ही सही बजट पर तो प्रतिकूल प्रभाव छोड़ता ही है.

आज ही सुबह फ्रीज साफ किया था. किलों में सड़ी-गली सब्जियां बाहर निकाल कर फैंकी थी क्योंकि अधिकतर खाना बाहर ही होता हो तो खरीदा हुआ सामान कब काम आता. ऐसा ही कुछ राशन व अनाज के साथ होता आ रहा था. संभालने के अभाव में उसकी लापरवाही से इनमें छोटे-छोटे भूरे कीड़े लग जाया करते है फिर उन्हें

वह फैंक देती है. फ्री में भी तो कुछ नहीं आता. सबके पैसे लगे होते है. आज कागज-पेंसिल के हिसाब ने उसकी आंखे खोल दी थी. कितना पैसा तो यूं ही वह खुद बर्बाद कर रही है. विचारों में तुलना करते हुए मन ही मन बड़बड़ा रही थी....वो तो दीपक भला इंसान है जो मुझ पर गुस्सा नहीं करता और मुझे सहता आ रहा है. खुद पर शर्म आ रही है मुझे.

ऐसा ही होना चाहिए, जो काम बिल्कुल आसानी से किए जा सकते है या जिन कामों में निपुणता हो उनसे खुद को कभी दूर नहीं करना चाहिए, अन्यथा बैठे-बैठे शारीरिक श्रम के अभाव में शरीर खराब और ऊपर से मेडीकल बिल भी बहुत खराब. स्वयं के कार्य स्वयं ही कर लेने से रचनात्मकता, गुणवत्ता और जानकारियां भी बढ़ती है. सरकार द्वारा बच्चों के हित में उच्चतम स्तर की सुशिक्षा तथा विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन एवं रचनात्मक कार्यविधियां (एक्टिविटिज) निःशुल्क एवं अल्प राशि की परिधि में ही लागू किया जाना सुनिश्चित किया गया है. गुणवत्ता पूर्ण कई परियोजनाओं का लाभ बच्चों को कम से कम राशि में जब उपलब्ध हो रहा होता है तब परिणामतः समय और पैसा दोनों की बचत भी तो होती ही है. महंगाई के साथ सभी ओर से आर्थिक वृद्धि के साधन भी बढ़े है लेकिन बिना सोचे-समझे व्यर्थ खर्चों पर लगाम लगाकर बचत तो हमें ही करनी होगी क्योंकि बचत भी एक छिपी अदृश्य कमाई है।

श्रीमती प्रकाश जैन
वरि. प्रबन्धक (प्रशासन)

माँ

वो आधे घण्टे थोड़ा और सो लेने देती है,
बचपने की आड़ में मेरी लापरवाही छुपा लेती है।
जब रहता हूँ सहमा सा या बीमार सा,
तो अपनी गोदी में मुझे सुला देती है।।

भूख ना होने पर भी एक रोटी और खिला देती है,
जब उदासीनता घेरे होती थी मुझे।
तो बन कर दोस्त मेरी सब ग़म भुला देती है,
ना जाने कितने त्याग कर मुझे जीना सिखा देती है।।

रहे वो एक पल दूर तो सूनेपन का मतलब बता देती है,
जब खाते थे पापा की डॉट फटकार।
तो ले सारे दोष अपने सर, मुझे बचा देती है,
मेरी एक फरमाइश पे वो क्या क्या बना देती है।।

जब होते थे फेल परीक्षा में मैं,
तो रात-रात भर जग मुझे पढ़ा देती है।
घर लौटने पर मुझको वो अपनी दुनिया बना लेती है,
और स्टेशन पर मुझे छोड़ते समय वो ऑसू बहा देती है।।

कैसे बताऊँ तुम सबको प्यार का अर्थ मैं,
अगर तुम्हें जिंदगी की भाग-दौड़ में उस माँ की याद नहीं आती है।
वो माँ ही है जो मुझे प्यार का मतलब समझा जाती है,
वो माँ ही है जो थोड़ा और देर तक जग लेने देती है,
वो माँ ही है जो आधे घन्टे थोड़ा और सो लेने देती है।।

मनीष कुमार
प्रबन्धक (सचिवीय)

एक बात पूछनी थी, जरूर बताना प्लीज (Just Asking)

Just asking

किसी को पता है,
गलतियों पर डालने वाला पर्दा कहा मिलता है.....
और कपडा कितना लगेगा..... ?

Just asking
एक बात बताओ,

धोखा खाने के बाद
पानी पी सकते है क्या ?

Just asking
अगर किसी से चिकनी–चुपडी बात करनी हो ,
तो कौन सा घी सही रहेगा ?
किसी को पता है ?

Just asking
पाप को हमेशा घडे में ही क्यूँ भरते है ?
ठंडा रहता है क्या ?

Just asking
ये दिल पर रखने वाला पत्थर कहा मिलता है ?
और वो कितने किलो का होता है ?

Just asking
किसी के जख्मों पर नमक छिडकना है ?
और कौन सा सही रहेगा ?
टाटा या पंतजलि.....?

Just asking
कोई मुझे बताएगा कि
जो लोग कहीं के नहीं रहते,
आखिर वो रहते कहॉ है ?

Just asking
सब लोग "इज्जत" की रोटी कमाना चाहते है ।
लेकिन "इज्जत" की सब्जी क्यों नहीं कमाता?

Just asking
भाड में जाने के लिए
ऑटो ठीक रहेगा या टैक्सी.... ?

Just asking
एक बात पूछनी थी,
ये जो इज्जत का सवाल होता है.....
ये कितने मार्कस का होता है ?

Just asking
एक बात पूछनी थी,
यह जो डिनर सेट होता है,
उसमें लंच भी कर सकते है क्या... ?

हॅसते रहिए..... हसॉते रहिये..... अपनी इम्युनिटी को बढाते रहिए.....

श्री राजकुमार लावडिया
वरि. प्रबंधन (प्रशासन)

जीएसटी के तहत टीडीएस प्रावधान

परिचय:

यह जीएसटी के तहत एक वैधानिक अनुपालन है, यदि कुछ अधिसूचित व्यक्ति (अधिनियम के अनुसार) कर योग्य आपूर्ति के लिए आपूर्तिकर्ता को भुगतान कर रहे है और यदि अनुबंध मूल्य अधिनियम के तहत सीमा (करों के बिना) से अधिक है, तो सीजीएसटी अधिनियम की धारा 51 के तहत जीएसटी पर टीडीएस, 2017 लागू हो जाएगा।

जीएसटी पर टीडीएस काटना किसे आवश्यक है:

1. केंद्र या राज्य सरकारी विभाग
2. स्थानीय अथॉरिटी
3. सरकारी एजेंसियां
4. सरकार द्वारा अधिसूचित कोई अन्य व्यक्ति।
   i. सरकार द्वारा 51% या अधिक हिस्सेदारी या नियंत्रण के साथ संसद या राज्य विधानमंडल के अधिनियम द्वारा स्थापित कोई प्राधिकरण या बोर्ड।
   ii. सरकार द्वारा पंजीकृत सोसायटी. या सोसायटी विनियमन अधिनियम, 1860 के तहत स्थानीय अथॉरिटी।
   iii. सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

टीडीएस कटौती:

यदि किसी अनुबंध के तहत कर योग्य आपूर्ति का कुल मूल्य (करों को छोड़कर) 2,50,000/- से अधिक है तो टीडीएस लागू होता है, जिसमें कुल अनुबंधों की संख्या की परवाह किए बिना, टीडीएस कटौती के लिए व्यक्तिगत अनुबंध मूल्य लिया जाना चाहिए।

टीडीएस नहीं काटा गया:

1. जब आपूर्तिकर्ता का स्थान और आपूर्ति का स्थान किसी राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में हो जो प्राप्तकर्ता के पंजीकरण के राज्य/केंद्र शासित प्रदेश से भिन्न हो।
2. छूट प्राप्त या शून्य रेटेड आपूर्ति ।
3. जब कटौतीकर्ता ने ऐसी आपूर्ति पर आरसीएम का भुगतान किया।

टीडीएस की दर:

1% - सीजीएसटी और 1% - एसजीएसटी या 2% - आईजीएसटी कर योग्य मूल्य पर

जीएसटी पर टीडीएस के तहत पंजीकरण:

बिना किसी सीमा के लागू/अधिसूचित व्यक्तियों के लिए पंजीकरण अनिवार्य है और यह जीएसटी पंजीकरण से अलग पंजीकरण है।

अनुपालन:

1. टीडीएस महीने की समाप्ति के 10 दिनों के भीतर जमा किया जाना चाहिए, नहीं तो उसके बाद 18% ब्याज लागू होगा और विलंब शुल्क 50 रुपये प्रतिदिन, अधिकतम 2000/- लागू होगा, कम/गैर कटौती के लिए जुर्माना लागू होगा।

2. कटौतीकर्ता जीएसटीआर-7 फ़ाइल करेगा।

3. जमा करने के 5 दिनों के भीतर जीएसटीआर-7ए में कटौतीकर्ता द्वारा आपूर्तिकर्ता को टीडीएस प्रमाणपत्र देना होगा और जब आपूर्तिकर्ता टीडीएस क्रेडिट स्वीकार करेगा तो यह जीएसटी कैश लेजर में दिखाई देगा।

4. किसी भी अतिरिक्त राशि का आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वीकृति से पहले, कटौतीकर्ता या कटौतीकर्ता द्वारा धारा 54 के तहत दावा किया जा सकता है।

5. प्रत्येक कैलेंडर माह में टीडीएस रिटर्न भरा जाना चाहिए, चाहे धारा 39(8) के अनुसार माह के दौरान कोई आपूर्ति की गई हो या नहीं।

अन्य बिंदु:

1) कंपोजिशन डीलर आउटपुट देनदारी के निपटान के खिलाफ भी इस तरह का दावा कर सकता है क्योंकि यह कोई इनपुट नहीं है।
2) यदि भारत के बाहर से आपूर्ति होती है, तो जीएसटी पर टीडीएस काटने की आवश्यकता नहीं है।
3) अपंजीकृत आपूर्तिकर्ता के लिए जीएसटी पर टीडीएस नहीं काटा जाएगा।
4) कटौतीकर्ता ऐसे सभी लेनदेन, कटौतियों और अनुबंधों का रिकॉर्ड रखता है।

श्री अंकित
प्रबंधन प्रशिक्षार्थी

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में सम्पादित विभिन्न आयोजनों का विवरण

माननीय सार्वजनिक उपक्रम समिति (2023–24) का अध्ययन दौरा उदयपुर, मुंबई, पोर्ट ब्लेयर और स्वराज द्वीप
(दिनांक 16.01.2024 से 20.01.2024 तक)

STUDY VISIT OF THE COMMITTEE ON PUBLIC UNDERTAKINGS FROM 16-20 JANUARY, 2024

माननीय समिति के अध्ययन दौरे के दौरान सीपीएसयू में कॉर्पोरेट गवर्नेंस विषय बिंदुओं (List of Points) पर श्री संजय कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण माननीय सार्वजनिक उपक्रम समिति (2023–24) के सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया। अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय द्वारा माननीय समिति को हडको की विस्तृत कार्य प्रणाली एवं भविष्य कि दिशा के रोडमैप की जानकारी प्रदान की।

माननीय समिति के सदस्य द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी पर राजस्थान राज्य तथा उदयपुर में किए गए कार्यो पर पुछे गये प्रश्न पर अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय द्वारा अवगत करवाया गया कि राजस्थान राज्य में हडको सी.एस.आर. योजनान्तर्गत कई योजनाएं स्वीकृत की गई है तथा हाल ही में रवीनद्रनाथ टैगोर आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, उदयपुर को हडको सी.एस.आर. योजनान्तर्गत Advance Life Support (ALS) Ambulance (CSR Amt. Rs. 60 lakh) की योजना स्वीकृत की गई है।

~~*~~*~~

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 03.10.2023 को हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण हेतु मंत्रालय से संयुक्त सचिव (राजभाषा), निदेशक (राजभाषा), हडको से निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), कार्यकारी निदेशक (राजभाषा), क्षेत्रीय प्रमुख, संयुक्त महाप्रबन्धक (परि.) एवं वरि. प्रबन्धक (राजभाषा) द्वारा प्रतिभागिता की गई।

संसदीय राजभाषा समिति

COMMITTEE OF PARLIAMENT ON OFFICIAL LANGUAGE

केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/संस्थानों आदि में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित

निरीक्षण प्रश्नावली

INSPECTION QUESTIONNAIRE

Regarding use of Hindi in Ministries/Departments/Attached and Subordinate Offices/Undertakings/Institutes etc. of the Central Government

निरीक्षण किए जाने वाले कार्यालय का नाम व पूरा पता : हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, (भारत सरकार का उपक्रम) जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय, हडको भवन, विद्युत मार्ग, ज्योति नगर, जयपुर - 302 005

Name and full address of the office to be inspected : Housing & Urban Development Corporation Limited (Government of India Enterprises) Jaipur Regional Office, HUDCO Bhawan, Vidyut Marg, Jyoti Nagar, Jaipur - 302 005

निरीक्षण की तिथि : 3 अक्टूबर 2023

Date of Inspection : 3rd October 2023

निरीक्षण के दौरान माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के सदस्यों को क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा हिंदी में किये गये कार्यो पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई तथा निरीक्षण पत्रावली में प्रस्तुत जानकारी / बिन्दुओं के क्रम में पूर्ण आश्वस्त किया गया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति सदस्यों द्वारा राजभाषा संबंधी निरीक्षण पर संतोष व्यक्त किया – निरीक्षण पत्रावली में प्रस्तुत जानकारी / विवरण इत्यादि की सराहना की।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति सदस्यों द्वारा निरीक्षण के पश्चात हडको को प्रमाण पत्र जारी किया गया।

डॉ. मनोज राजोरिया
Dr. Manoj Rajoria
संसद सदस्य (लोक सभा)
Member of Parliament (Lok Sabha)

संयोजक / Convenor
तीसरी उपसमिति
Third Sub Committee
संसदीय राजभाषा समिति
Committee of Parliament on Official Language

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अ0शा0 पत्र सं0 11012/06/2023-समिति-3 दिनांक: 03.10.2023

प्रिय श्री सुधीर कुमार भटनागर जी,

विदित है कि संसदीय राजभाषा समिति, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 4 में निहित प्रावधानों के तहत गठित एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति है। इस समिति में कुल 30 संसद सदस्य हैं, जिसमें 20 लोकसभा से और 10 राज्यसभा से। माननीय गृहमंत्री जी इस समिति के अध्यक्ष हैं। समिति का कार्य संघ के राजकीय कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा करना है।

2. संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति ने दिनांक 03.10.2023 को आपके कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की जांच की और इस संबंध में आपसे तथा आपके सहयोगियों से विस्तार से चर्चा हुई। समिति का विश्वास है कि आप संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन पर किए गए माननीय राष्ट्रपति महोदय के आदेशों का अनुपालन करेंगे और राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी शेष लक्ष्यों को शीघ्र प्राप्त करेंगे तथा कार्यालय की आगामी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इसका मूल्यांकन कर समिति सचिवालय को अविलम्ब सूचित करेंगे।

3. निरीक्षण के दौरान आपके सहयोग के लिए धन्यवाद।

आपका,

मनोज राजोरिया

(डॉ. मनोज राजोरिया)

श्री सुधीर कुमार भटनागर,
क्षेत्रीय प्रमुख,
हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड(हडको),
जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय, हडको भवन,
विद्युत मार्ग, ज्योति नगर,
जयपुर, राजस्थान

कार्यालय / Office : 11, तीन मूर्ति मार्ग, Teen Murti Marg, नई दिल्ली / New Delhi - 110011
दूरभाष / Phone : 011-21411492, ई–मेल / Email : 3rdsubcommittee@gmail.com

~~*~~*~~

हडको सीएसआर सहायता - दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों को उपकरणों का वितरण

-

HUDCO CSR assistance - Distribution of Aids and Appliances to PwDs and Senior Citizens

दिनांक 26.02.2024 को दौसा (राजस्थान) में वितरण शिविर

दिनांक 26.02.2024 को हडको सी.एस.आर. अंतर्गत Artificial Limbs Manufacturing Corporation of India (ALIMCO) के माध्यम से दिव्यांगजनों हेतु Aids & Assistive Devices के वितरण हेतु रामचंद्र फार्म हाउस, अलवर सिकन्दरा मेगा हाइवे, करनावर, तहसील बसवा, जिला दौसा में शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में श्रीमती जसकौर मीना, माननीया सांसद दौसा, श्री भागचंद टांकडा, माननीय विधायक बांदीकुई, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, राजस्थान सरकार, एलिम्को, हडको एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

एलिम्को द्वारा कार्यक्रम के उदघाटन के दौरान, कार्यक्रम के उद्धेश्य तथा उक्त हेतु हडको द्वारा देश में सी.एस.आर. अंतर्गत जारी राशि एवं सहयोग से उपस्थित जन समूह को अवगत करवाया गया।

लाभार्थियों को उपकरणों का वितरण

कार्यक्रम के दौरान माननीया सांसद द्वारा हडको सी.एस.आर. अंतर्गत दिव्यांगजनों हेतु वितरण किए जा रहे Aids & Assistive Devices के प्रयासों को सराहा।

शिविर के माध्यम से कुल 211 दिव्यांग लाभार्थियों में से 153 पुरूष एवं 76 महिलाओं को Motorized Tri-cycle, Tricycle conventional Hand Propelled (Gatimaan), Chair / Stool with Commode, Collar Cervical Flexo PU, Knee Brace, Spinal support, Walking Stick, Wheel chair for Disabled (Saathi), wheel Chair with Commode) इत्यादि का वितरण किया गया।

~~*~~*~~

ओवरसीज प्रोफेशनल्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 04 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2023 तक जयपुर का दौरा

International Training Programme under ITEC on "Housing the Urban Poor Policy, Planning and Implementation – Indian Experience" Study Tour Agra to Jaipur

विदेश मंत्रालय (एमईए), भारत सरकार एवं हडको द्वारा ''शहरी गरीबों को आवास – नीति, योजना और कार्यान्वयन – भारतीय अनुभव'' विषय पर आयोजित भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) के अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम किया जा रहा है। जिसमें 15 देशों जैसे – अल्बानिया, अर्जेंटीना, कोट डिलवोइर, इंडोनेशिया, जमैका, लेसोथो, मालदीव, नाइजर, दक्षिण सूडान, श्रीलंका, सीरिया, ताजिकिस्तान, तंजानिया और जिम्बाब्वे से 27 प्रोफेशनल, आर्किटेक्ट, टाउन प्लैनर, इंजीनियर, प्रशासक, शहरी डिजाइनर, सामुदायिक विकास समाजशास्त्री भाग ले रहे है।

इस वर्ष ट्रेनिंग कार्यक्रम अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का प्रतिनिधि मण्डल राजस्थान राज्य की विभिन्न आधारभूत संरचना / आवासीय योजनाओं का अध्ययन करने के क्रम में दिनांक 14.12.2023 से 16.12.2023 तक जयपुर के Study Tour पर रहे।

दिनांक 15.12.2023

नगर निगम जयपुर ग्रेटर की Delwas स्थित Sewage Treatment Plant का दौरा

ट्रेनिंग कार्यक्रम के अंतर्गत आज दिनांक 15.12.2023 को हडको द्वारा वित्त पोषित नगर निगम जयपुर ग्रेटर की Delwas स्थित Sewage Treatment Plant (215 MLD) का दौरा किया गया। दौरे के दौरान Museum / Audio-Visual Gallery तथा प्रस्तुतिकरण के माध्यम से प्लान्ट के कार्य के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रतिनिधि मण्डल द्वारा जानकारी प्रदान करने पर धन्यवाद व्यक्त किया तथा कार्य की प्रशंसा की।

Affordable Housing Project EWS/LIG परियोजना, प्रतापनगर (सैक्टर 3) का दौरा

साथ ही राजस्थान आवासन मण्डल की Affordable Housing Project EWS/LIG परियोजना, प्रतापनगर (सैक्टर 3), का दौरा किया गया। दल को Affordable Housing Project के क्रम में राजस्थान आवासन मण्डल के अधिकारियों द्वारा विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई तथा फ्लैटस् का निरीक्षण भी करवाया गया। ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल द्वारा डिजाइन और गुणवता देखकर राजस्थान आवासन मण्डल के कार्यो की सराहना की।

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का दौरा

ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में आगमन पर श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख के सानिध्य में सभी आगंतुकों का राजस्थानी संस्कृति व परम्परा के साथ स्वागत किया गया। ग्रीन सिटी के विकास के तहत ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के प्रत्येक सदस्य द्वारा **"प्रत्येक एक वृक्ष"** की भावना के साथ पौधा रोपित किया गया। हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा किए जा रहे कार्यों का प्रस्तुतीकरण दिया गया।

सिटी पार्क, मानसरोवर, जयपुर का दौरा।

ट्रेनिंग कार्यक्रम के अंतर्गत राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा निर्मित सिटी पार्क, मानसरोवर, जयपुर का दौरा किया गया। दौरे के आवासन मण्डल के अधिकारियों द्वारा प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत किया गया तथा सिटी पार्क के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

दिनांक 16.12.2023 को प्रतिनिधि मण्डल को अल्बर्ट हॉल संग्रहालय, जंतर मंतर एवं हवामहल का भ्रमण करवाया गया

~~*~~*~~

दिनांक 25.02.2024 को आयोजित खेल दिवस

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 25.02.2024 को खेल दिवस आयोजित किया गया है। कार्यालय कार्मिकों के साथ परिवार के सदस्यों ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ अपनी प्रतिभागिता दी। स्पोर्टस डे पर भिन्न-भिन्न खेल गतिविधियां खेली गई जैसे की फुटबॉल, क्रिकेट, सौ मीटर दौड़, नीबू दौड़ प्रतियोगिता (बच्चों, पुरूष तथा महिलाओं हेतु पृथक-पृथक), बैडमिंटन तथा हाउजी आदि आनन्दित कर देने वाला आयोजन रहा जिसमें प्रत्येक सदस्य द्वारा सक्रिय रूप से अपनी-अपनी प्रतिभागिता दी गई।

दिनांक 27 से 29 जुलाई 2023 को उदयपुर में आयोजित ''उज्ज्वल राजस्थान – आत्मनिर्भर भारत की ओर ....'' प्रदर्शनी में हडको द्वारा प्रतिभागिता

दिनांक 27 से 29 जुलाई 2023 को उदयपुर में आयोजित ''उज्ज्वल राजस्थान – आत्मनिर्भर भारत की ओर ....'' प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें हडको ने अपनी स्टॉल के माध्यम से हडको की विभिन्न गतिविधियों / कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनी में हडको स्टॉल पर हडको के बारे में, हडको के विभिन्न कार्यक्रमों, देश व राजस्थान राज्य में हडको द्वारा वित्त पोषित विभिन्न

आवासीय एवं अधोसंरचना योजनाओं, हडको CSR, GoI Action Plan Schemes- PMAY इत्यादि के कट–आउट के माध्यम से स्टॉल में दर्शाया गया। साथ ही हडको विवरणिकाओं को भी स्टाल पर रखा गया। प्रदर्शनी के दौरान कई स्कूलों, कॉलेजों के छात्र – छात्रों, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने स्टाल का दौरा किया। इस दौरान आंगतुकों द्वारा हडको द्वारा किये जा रहे कार्यो, वित्त पोषण इत्यादि के क्रम में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की। छात्र – छात्रों द्वारा हडको वित्त पोषण की प्रक्रिया, ब्याज दर, प्रतिभूति इत्यादि के क्रम में प्रश्नों के माध्यम जानकारी प्राप्त की।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023

दिनांक 01 अक्टूबर 2023 को स्वच्छता ही सेवा अभियान के अन्तर्गत श्रम दान।

सफाई से पूर्व

सफाई के पश्चात

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस – 2023

दिनांक 24 अप्रेल 2023 को आजादी का अमृत महोत्सव (AKAM) के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।

कठपूतली नगर, कच्ची बस्ती, ज्योति नगर के ऑगनबाड़ी केन्द्र पर हडको से पेनलीकृत शिशु रोग विशेषज्ञ द्वारा जरूरतमंद बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय कैम्पस में इटरनल हार्ट केयर एंड रिसर्च सेंटर, जयपुर द्वारा हेल्थ चैक–अप कैम्प का आयोजन किया गया।

महिला दिवस 2024

जन्म दिवस का आयोजन 2024

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय समाचारों में

HUDCO Jaipur Regional Office
2 d ·

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड, हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री संजय कुलश्रेष्ठ ने आज राजस्थान सरकार के माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्रीमान गजेंद्र सिंह खींवसर और विभागों के प्रशासनिक प्रमुखों के साथ बैठक की, हड़को द्वारा राज्य की विकास परियोजनाओं के रोड मेप को अंतिम रूप दिया गया, वित्तपोषण के साथ राज्य में तकनीकी परामर्श सेवा प्रदान करने का मुख्य लक्ष्य रखा गया।

स्वास्थ्य मंत्री ने हडको से वित्तीय सहायता के लिये चर्चा की

■ हडको के प्रबंध निदेशक संजय कुलश्रेष्ठ ने जयपुर का दौरा किया

जयपुर, (का.सं.)। स्वास्थ्य मंत्री खींवसर ने राज्य के चिकित्सा क्षेत्र में आगामी वर्षों में किये जाने वाले कार्यों का विस्तृत विवरण प्रदान किया। उनके द्वारा इन योजनाओं पर हडको से तकनीकी परामर्श सुविधा तथा वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिये भी चर्चा की गई।

हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक संजय कुलश्रेष्ठ ने जयपुर का दौरा किया। इस दौरान स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, अतिरिक्त मुख्य सचिव (चिकित्सा), अतिरिक्त मुख्य सचिव (वित्त), प्रमुख शासन सचिव (उद्योग एवं वाणिज्य विभाग), शासन सचिव (जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग) तथा अन्य विभागों के प्रशासनिक प्रमुखों के साथ बैठक की गई।

अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक ओर से अवगत कराया गया कि ह देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास आवास की विभिन्न योजनाओं वित्तीय सहायता प्रदान करने के f केंद्र सरकार का अग्रणी तकनी वित्तीय उपक्रम है। हडको अपने व क्षेत्र को विस्तृत्त करते हुए राज्य विकास में वित्तीय सहायता के सा साथ विभिन्न विकास की परियोजन पर तकनीकी सहायता भी प्रदान व जा रहा है। हडको द्वारा देश के विव की परियोजनओं पर तकनीकी सहा भी प्रदान करने जा रहा है। हडको देश के विकास में वित्त पोषण के माध से वित्तीय वर्ष 2023-24 में वि वर्षों के सापेक्ष महती प्रगति की है।

प्रदेश में भी हडको की ओर विगत वर्षों में सापेक्ष कई योजनाओं वित्तीय सहायता प्रदान की हे, जि प्रमुख योजनाएं, जल जीवन मि इंटरसिटी सड़क निर्माण योजन अक्षय ऊर्जा सोलर पार्क, स्मार्ट f और अमृत योजना के साथ साथ नि निकायों में विभिन्न बुनियादी ढाचे के विकास कार्यों का निर्माण, भरतपुर ड्रेनेज योजना, इत्यादि पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

हडको अध्यक्ष ने चिकित्सा मंत्री से की मुलाकात

ब्यूरो/ नवज्योति, जयपुर। हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (हडको) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक संजय कुलश्रेष्ठ ने चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर से मुलाकात कर अनेक मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने जयपुर दौरे के दौरान चिकित्सा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव, उद्योग विभाग के प्रमुख शासन सचिव, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के शासन सचिव के साथ बैठक कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा हुई।

Sanjay Kulshrestha, Chairman and Managing Director of Housing and Urban Development Corporation Limited (HUDCO), visited Jaipur on Friday. Meetings were conducted with key officials, including the Health Minister Gajendra Singh Khimsar to discuss the future of the medical sector in Rajasthan. The discussions aimed to explore the potential for technical consultancy and financial aid from HUDCO in upcoming projects. HUDCO, a prominent financial institution, expressed its commitment to extending support for infrastructure and housing development in the state, leveraging its expertise and low-interest financing. Past achievements were highlighted, indicating HUDCO's significant contributions to various schemes in Rajasthan in the previous fiscal year, including the Jal Jeevan Mission and Smart City initiatives.

19 देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने हाउसिंग बोर्ड की परियोजनाओं का किया अध्ययन

प्रतिनिधिमंडल ने बेहतर प्रबंधन के लिए मंडल की कार्यशैली की दिल खोलकर की सराहना

दैनिक पर्यटन बाजार

जयपुर। विदेश मन्त्रालय एवं 'मानव प्रबन्धन बसाव संस्थान (।स्स्ड्ढ) नई दिल्ली द्वारा ड्डञ्जश्वष्ट पाठ्यक्रम योजना के तहत आयोजित किये जा रहे ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर ओवरसीज प्रोफेशनल्स ऑन फॉर्मल सॉल्यूशंस टू इनफॉर्मल सेटेलमेंट्स के अन्तर्गत 19 देशों के 25 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमण्डल ने बुधवार को आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन पर मंडल की महत्वाकांक्षी योजनाओं का अध्ययन किया।

आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के जरिए जयपुर के मशहूर सिटी पार्क, विधायक फ्लैट्स, अफॉर्डेबल हाउसिंग प्रोजक्ट (मुख्यमंत्री जन आवास योजना) सहित कई अन्य परियोजनाओं का विस्तार से परिचय दिया। प्रस्तुतिकरण को देखकर प्रतिनिधिगण हतप्रभ थे कि कोरोना में जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब मंडल उसी गति से कैसे काम पर पाया। उन्होंने विधायक आवास योजना के निर्माण की गति पर भी हैरानी जाहिर करते हुए कहा कि मंडल ने किसी प्राइवेट बिल्डर से भी तेज गति से काम कर दिखा दिया कि बेहतर नेतृत्व के भी कुछ मायने होते हैं। प्रतिनिधि दल गुरुवार को सिटी पार्क, विधायक आवास परियोजना और अफॉर्डेबल हाउसिंग प्रोजक्ट का भी दौरा करेगा।

आयुक्त ने प्रजेंटेशन के दौरान बताया कि मंडल ने आवासों के अलावा लीक से हटकर भी कई नवाचार किए हैं। उन्होंने इस दौरान कोचिंग हब, सिटी पार्क, चौपटियां, कॉन्स्टिट्यूशन क्लब जैसी परियोजना के बारे में भी बताया। प्रतिनिधिमंडल ने सभी योजनाओं को दिलचस्पी से देखा और सराहा भी। उल्लेखनीय है कि दुनिया के 19 देशों के 25 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का प्रतिनिधिमंडल तीन दिवसीय जयपुर के स्टडी टूर पर है। प्रतिनिधिमंडल प्रदेश के अन्य विभागों की प्रमुख योजनाओं का भी अध्ययन करेगा। इस अवसर पर हडको से श्रीमती वर्षा पुनहानी, सुधीर भटनागर, मुख्य अभियंता प्रथम केसी मीणा, मुख्य अभियंता द्वितीय जीएस बाघेला, मुख्य अभियंता मुख्यालय मनोज गुप्ता सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

हडको के जयपुर कार्यालय को बेस्ट केटेगरी पुरस्कार से किया सम्मानित

ब्यूरो/ नवज्योति,जयपुर। केन्द्रीय आवासन मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने हडको के 53 वें स्थापना दिवस पर हडको के जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को बेस्ट केटेगरी-बी कार्यालय के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दिल्ली के स्टेनी ऑडिटोरियम, इंडिया हैबीटेट सेंटर में आयोजित समारोह में हडको के क्षेत्रीय प्रमुख सुधीर कुमार भटनागर ने पुरस्कार

कार्यालय ने वर्ष 2022-2023 में 2554 करोड़ रुपए के ऋण स्वीकृत किए और 1431.11 करोड़ रुपए की रिकॉर्ड ऋण अवमुक्ति की गई। रूडसिको को अर्बन इंफ्रास्टक्चर केटेगरी के तहत बोस्ट परफॉरमिंग एजेंसी के लिए परियोज प्रदीप गर्ग को सम्मानित f राज्य में पीएमएवाई-अर में विशिष्ट योगदान के परफॉरमिंग प्राइमरी इंस्टीट्यूशन/बैंक्स श्रेणी राजस्थान मरूधरा ग्रामी पुरस्कृत किया गया। बैंक निदेशक ज्ञानेन्द्र कुमा

9 देशों के प्रतिनिधिमंडल ने

जयपुर, 31 मार्च (ब्यूरो): 19 से आए 25 प्रतिनिधियों ने वार को सिटी पार्क की विजिट रान विजिटर बुक में सिटी पार्क दिल खोलकर प्रशंसा की।

पार्क के भ्रमण के दौरान निधि मंडल ने मध्यम मार्ग ना, रॉक फाउंटेन, लेक, 213 ऊंचा फ्लैग मास्ट जिस पर ीय तिरंगा लहरा रहा था एवं न्न स्कल्पचर्स को देखा एवं कंठ से प्रशंसा की। सिटी पार्क डको के तत्वावधान में आए ानों का राजस्थानी अंदाज में । एवं साफा पहनाकर स्वागत ा गया। मेहमानों ने गोल्फ कार ठकर सिटी पार्क का भ्रमण किया आने वाले स्थानीय पर्यटकों से बातचीत की। इससे पहले निधि मंडल ने राजस्थान ायक आवास परियोजना, मंत्री जन आवास योजना सहित अन्य परियोजनाओं का दौरा

जयपुर : सिटी पार्क में पहुंचे 19 देशों के प्रतिनिधि मंडल

किया। दल के सभी प्रतिनिधि मंडल की ओर से किए गए निर्माण को देखकर काफी प्रभावित और प्रसन्न नजर आए। गौरतलब है कि विदेश मंत्रालय एवं मानव प्रबन्धन बसाव संस्थान नई दिल्ली की ओर से एक पाठ्यक्रम योजना के तहत आयोजित किए जा रहे ट्रेनिं ओवरसीज प्रोफेशन सॉल्यूशंस टू इनफ के अन्तर्गत 19 देशों प्रतिनिधियों के राजस्थान आए है प्रतिनिधिमंडल ने आवासन मंडल

हडको का पौधरोपण अभियान आयोजित

जयपुर | हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको) की ओर से भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में रविवार को पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुधीर कुमार भटनागर रहे। हडको क्षेत्रीय कार्यालय तथा एस-11 एवं एस-12, हडको आवासीय परिसर, ज्योति नगर में पौधरोपण किया गया।

Achievements in the year!

CITY FIRST

During the event

Housing and Urban Development Corporation Ltd (HUDCO) celebrated its 53rd foundation day at Stein Auditorium, India habitat Centre, New Delhi on April 25 where Hardeep Singh Puri, Minister of Housing and Urban Affairs and Minister of Petroleum and Natural Gas, Government of India were the Chief guest for the function. At the ceremony, HUDCO Jaipur Regional Office was felicitated with Excellent award for Best Performing office in category-B for its outstanding business performance in the state. Sudhir Kumar Bhatnagar, Regional chief HUDCO Jaipur was received the award on behalf of Jaipur regional office. During the financial year 2022–2023, HUDCO has made outstanding sanction of loan of Rs.2554 crore and released Rs.1431.11 crore for various infrastructure works across the state.

RUDSICO, state agency under Government of Rajasthan was sanctioned Rs.2235 crore by HUDCO for carrying out various infrastructure development works across urban local bodies in the state and for which RUDSICO was also awarded with Best Performing Agency Award by HUDCO on the annual day. Pradeep Garg, Project Director received the award on behalf of RUDSICO. Under the category of Best Performing Primary Lending Institutions/Banks, Rajasthan Marudhara grameen bank was awarded from the state for significant contribution in PMAY-Urban.

HUDCO

HUDCO observed Vigilance Awareness Week on this year's theme "Corruption Free India for a Developed Nation". The Integrity pledge was administered to HUDCO officials and during the week, an essay and slogan writing competition and lecture on 'Preventive Vigilance' were organized in HUDCO offices pan-India, to create awareness against corrupt practices and to promote probity in public life to achieve a corruption—free society. The officials were also administered the Unity Pledge to mark National Unity Day. Further, a Vigilance Awareness programme was organized at the South Delhi Municipal Corporation Boys School, Nizamuddin Basti, Sarai Kale Khan, New Delhi. The students participated enthusiastically in this event and shared their thoughts on the theme by way of speech /poetry/ Songs. Shri M. Nagaraj, Director (Corporate Planning), Shri D. Guhan, Director (Finance) and other senior HUDCO officials felicitated the participating students. In continuation, Vigilance Awareness Week 2022, was started by administering online Pledge by Shri Sudhir Kumar Bhatnagar, Regional Chief, in HUDCO Regional office, Jaipur. Talk show and Drawing competition among students of College and Central School were organized and prizes to the winners were distributed and vigilance awareness campaign was done during this week.

राष्ट्र के सपनों को साकार करने तथा जीवन गुणवत्ता को प्रोन्नत करके राष्ट्र निर्माण में सहभागिता के लिए प्रतिबद्ध

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का उपक्रम)

इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110 003

www.hudco.org

आवास	शहरी विकास	इन्फ्रास्ट्रक्चर	प्रशिक्षण	परामर्श सेवाएं